वाप्कोस दर्पण

संयुक्तांक 87-88

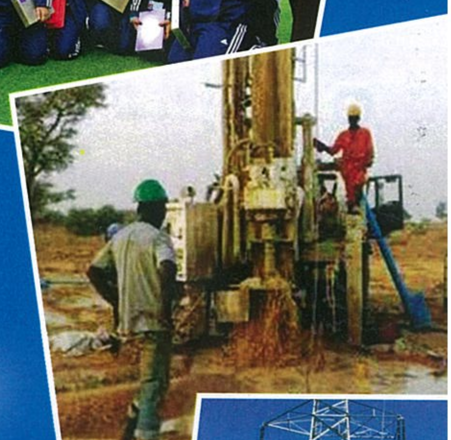

अक्टूबर 2017 से मार्च 2018

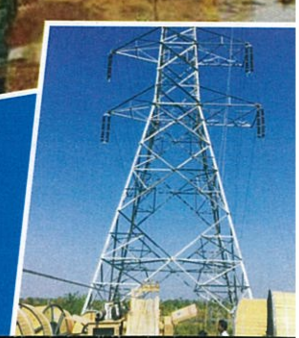

सीएमआरएस व वाप्कोस के सहयोग से आईएसआरएमटीटी द्वारा आयोजित
इण्डोरॉक 2017 - 7वां भारतीय रॉक सम्मेलन

श्री विक्टर आर. रोजस, अध्यक्ष, पावर टेक इंजीनियर्स्, यूएसए के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

वाप्कोस दर्पण

अक्टूबर, 2017 से मार्च, 2018 संयुक्तांक (87-88)

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादन मण्डल
अनुपम मिश्रा
कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादक
निम्मी भट्ट,
प्रमुख (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक
शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं०
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की ओर से	1
संबोधन	3
सम्पादकीय – प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	4
राजभाषा गतिविधियां	5
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा राजभाषा वैजयंती पुरस्कार	8
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का.) गुडगांव के तत्वावधान में राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन	9
वाप्कोस में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2018 समारोह का आयोजन	13
लेख – तुर्गा एक पम्प स्टोरेज हाइड्रो पावर परियोजना	19
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित प्रथम राजभाषा सम्मेलन में वाप्कोस की भागीदारी	24
लेख – चिरस्मरणीय पल	26
लेख – मृदा प्रदूषण एक ज्वलंत समस्या	29
लेख – सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका	31
विविध कविताएं	36-44
लेख- सेहत का खजाना मूंगफली का दाना	45
दीप्ती मोदेकर – प्रथम रेल इंजन ड्राइवर	47
लेख – अनुवाद और अनुवादक	50
लेख – जीवन एक टाइम पास	53
कवि और धनवान आदमी	56
लेख – गायत्री मंत्र और बुद्ध	58
कम्प्यूटर पर यूनिकोड हिन्दी का इस्तेमाल	61
परमात्मा की परिभाषा क्या है? परमात्मा की प्रतिमा कैसी है?	64
लेख – एक आदमी को कितनी जमीन चाहिये	66
लेख – रामायण पढ़ने का ग्रन्थ नहीं, जीने का शास्त्र है।	70
जिन्दगी के साथ कुछ पल	72
राजभाषा संबंधी कुछ आवश्यक जानकारी	74
स्वच्छ भारत अभियान 201 ता पखवाड़ाच्छ्स्व -8	75
पुस्तकालय से	77

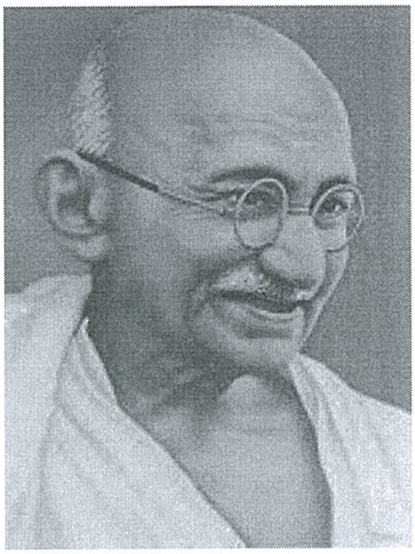

अहिंसा प्रचंड शस्त्र है। इसमें परम पुरूषार्थ है। यह यह भीरू से दूर-दूर भागती है, वीर पुरूष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। यह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नहीं है, यह चेतनमय है। यह आत्मा का विशेष गुण है। इसलिए इसका वर्णन परम धर्म के रूप में किया गया है।

\- महात्मा गांधी

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

वाप्कोस दर्पण का नवीनतम अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इस प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में हमें 'कर्म ही पूजा है' के सिद्धान्त को व्यवहार में लाना होगा। बदलते आर्थिक व व्यवसायिक परिदृश्य में समय के साथ अपने व्यवहार और मनोवृति में बदलाव करना होगा। क्रमबद्ध एवं व्यवसायिक प्रचालन की राह का निरन्तर अनुकरण करना होगा ताकि हम अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का डट कर मुकाबला कर सकें।

हम सभी को एक दूसरे के साथ समन्वय करते हुए एक टीम के रूप में कार्य करना होगा तभी हम सफलता की सीढ़ियां चढ़ने में सफल होंगे क्योंकि सफलता की राह आसान नहीं होती। सफलता का मूलमंत्र है पूरे समर्पण के साथ उद्देश्य की ओर बढ़ते रहना। मेरा विश्वास है कि आप इसी समर्पण भावना के साथ निरंतर कार्य करते रहेंगे और कम्पनी की छवि को उज्जवल बनाएंगे।

मैं आशा करता हूं कि वक्त की जरूरत के अनुसार हम स्वयं को परिमार्जित करके अपनी व्यवसायिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रचार-प्रसार में प्रगति करते हुए वाप्कोस को उन्नति के शिखर पर ले जाएगें। यही हमारी दिशा होगी और यही हमारा संकल्प।

आगामी अंकों की सफलता के लिए शुभकामनाओं के साथ,

आर. के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

संबोधन

गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' रचनात्मक ऊर्जा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। गृह पत्रिका के माध्यम से हम विभिन्न जानकारियां आदि आप तक पहुंचाने के उद्देश्य में काफी हद तक सफल हुए हैं जिसका परिणाम है आपसे प्राप्त मूलरूप से लिखित लेख, कहानियां व कविताएं आदि। गृह पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिससे कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्राप्त होता है।

सर्वप्रथम मैं आपको सहर्ष बताना चाहता हूं कि राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन तथा राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए दिनांक 10.01.2018 को जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा वाप्कोस को ''राजभाषा वैजयंती पुरस्कार 2015-16 के **प्रथम पुरस्कार** स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सब आपके सहयोग का ही परिणाम है।

किसी भी देश की भाषा उस देश की संस्कृति का आइना होती है। हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसका संवर्द्धन हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। हिन्दी का प्रयोग सरकारी कामकाज में तो होता ही है, साथ ही, आधुनिक उद्योग एवं व्यवसाय जगत की प्रगति में भी यह अत्यंत मददगार है। मातृभाषा हिन्दी के बिना ग्राहकों तक पहुंचना संभव नहीं है। वाप्कोस ने अपने कर्मचारियों को प्रेरणा व प्रोत्साहन के द्वारा नवीनतम तकनीक की सुविधा जैसे ट्रांसिट्रलेशन हिन्दी टाइपिंग प्रदान कर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। यही नहीं, हम कर्मचारियों को भारत सरकार की विभिन्न प्रशिक्षण योजनाओं के द्वारा हिन्दी में काम करने के लिए प्रशिक्षित भी कर रहे हैं।

हमारा उपक्रम अपने कार्य के अन्य क्षेत्रों में जिस प्रकार आगे बढ़ रहा है उसी प्रकार राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अग्रसर है। प्रभारी अधिकारी के रूप में मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि कार्यालय में राजभाषा कार्यों को सुचारू व नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। हमें अपने कार्यालय में राजभाषा के लिए सकारात्मक वातावरण बनाने के प्रति सजग रहना होगा । कार्यालय के समस्त

कार्यों में हिन्दी के उपयोग की कई सम्भावनाएं हैं। कार्यालय के अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा को बढ़ावा दें क्योंकि सर्वविदित है कि भाषा प्रयोग से ही सशक्त होती है।

यह हर्ष का विषय है कि अपनी व्यस्तता के बावजूद हमारे कर्मचारियों ने अपने लेखों आदि के माध्यम से पत्रिका को और अधिक पठनीय बनाकर सराहनीय कार्य किया है। निसंदेह आप सब बधाई के पात्र हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया और प्रेरणात्मक प्रतिक्रियाएं भेजकर हमें प्रोत्साहित किया।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं अथक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे और हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नये आयाम देंगे।

शुकामनाओं के साथ,

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय

वाप्कोस की त्रैमासिक पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' की गौवरशाली विकास यात्रा वर्ष 1996 से सतत् रूप से जारी है। इस त्रैमासिक गृह पत्रिका के अब तक 86 अंक निकल चुके हैं और पत्रिका का संयुक्तांक 87-88 आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह यात्रा लंबी रही परन्तु यह आपके संबल का ही परिणाम है कि हम ओर जोश व उत्साह के साथ आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए कृत संकल्प हैं। निश्चय ही राजभाषा को समर्पित इस पत्रिका की आगामी यात्रा सोद्देश्य व फलदायी होगी।

भाषा विचारों की सहज एवं सार्थक संवाहक है। भारत की राजभाषा हिन्दी है और राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिसके कारण आज भारत में ही नहीं समस्त विश्व में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। किसी भी व्यक्ति की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मजबूत बनाता है। जो देश आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं उनके भाषा के पंख भी बड़े तेजी से उड़ते हैं। विश्व के सभी लोग उस भाषा को सीखना चाहते हैं ताकि उन्हें उनके साथ व्यवसाय करने में आसानी हो। आप सभी जानते हैं कि विश्व के अनेक देशों में भारतवर्ष के प्रति बढ़ते आकर्षण और व्यवसायिक संभावनाओं के कारण हिन्दी भाषा सीखने में विशेष रूचि उत्पन्न हो रही है।

हिन्दी का महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि चाहे नेता हो, अभिनेता हो या व्यापारी हर भारतीय तक अपनी बात पहुंचाने के लिए उसे हिन्दी का उपयोग करना ही पड़ता है। मैं आप सबसे अनुरोध करती हूं कि अपनी जिम्मेदारी के प्रति सचेत होते हुए अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें। अंत में केवल इतना कहूंगी :-

एक भारतीय की शक्ति है हिन्दी
एक सहज अभिव्यक्ति है हिन्दी।

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुड़गांव, की छमाही बैठक श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस की अध्यक्षता में दिनांक 13.12.2017 को पावर ग्रिड कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड के कार्यालय में आयोजित की गई। इस बैठक में नराकास, गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे।

- श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में दिनांक 18.12.2017 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- दिनांक 26.12.2017 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर के.हि.प्र.सं., गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक भी उपस्थित थे जिन्होंने कार्यालय के कामकाज में हिंदी के महत्व तथा राजभाषा नियम/अधिनियमों की जानकारी दी एवं नोटिंग/ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 27.12.2017 को संयुक्त सचिव (पीपी) एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) तथा श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिंदी) ने भाग लिया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा दिनांक 7.11.2017 को ब्रहमपुत्र बोर्ड, गुवाहाटी में प्रथम राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में वाप्कोस से निम्नलिखित कार्मिकों ने भाग लिया:-

- श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)
- श्री डी.के.सेठी, उप प्रबंधक (रा.भा.)
- श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिंदी)
- श्रीमती शारदा रानी, वरि.सहायक

- नराकास, गुड़गांव के तत्वावधान में इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड द्वारा दिनांक 28.11.2017 को राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड द्वारा वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुड़गांव को उचित मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 07.10.2017 (शनिवार) को माननीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल जी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक, (रा.भा.) द्वारा दिनांक 25.10.2017 को वाप्कोस के चेन्नई कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुड़गांव के तत्वावधान में फरवरी 2018 में आयोजित किये जाने वाले राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह संयुक्त रूप से आयोजित करवाने वाले वाप्कोस सहित नराकास, गुड़गांव के आठ सदस्य कार्यालयों की समन्वय बैठक दिनांक 11.01.2018 को कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस की अध्यक्षता में की गई।

- गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 9.2.2018 को वाराणसी में आयोजित ''एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह'' में वाप्कोस से श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) द्वारा भाग लिया गया।

- दिनांक 15.03.2018 को जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के श्री एम.सी.भारद्वाज, संयुक्त निदेशक (रा.भा.), श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं अन्य अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के गुड़गांव कार्यालय का निरीक्षण किया गया।

- दिनांक 16.03.2018 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- दिनांक 27.03.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) भी उपस्थित थे जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी।
- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 26.03.2018 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

****

अजन्मी बेटी की गुहार

निम्मी भटट,
प्रमुख (रा.भा.का.)

मां न ऐसा पाप करो, ऊपर वाले से डरो,
मुझे कोख में न मारो, मैं खून तुम्हारा हूं,
तुम ही अब इंसाफ करो मां, केवल तुम ही,
मां न ऐसा पाप करो...............

तूने ही तो जन्म दिया है वीरों और वीरांगनाओं को
नेता को, अभिनेता को हर विजेता को,
फिर मां मैंने क्या किया, न लेने मुझे जन्म दिया,
मां न ऐसा पाप करो...............

मां मैं तेरी अजन्मी बेटी, रोती हूं, बिलखती हूं,
भूल हुई क्या ऐसी मुझसे जो तुम इतनी रूठी हो
दादी को समझाओं और पापा को भी समझाओ
मन में बांधी है तुमने ऐसी दुविधा क्यों
दुनिया में मुझे आने दो, सुन्दर स्वप्न सजाने दो
मुझे कोख में न मारो, मां न ऐसा पाप करो...........

मां मैं अंश तुम्हारा हूं, जीने दो मुझे जीने दो
अपने गर्भ में बढ़ने दो, जन्म मुझे ले लेने दो
सह लूंगी सारे दुख पीड़ा, तेरी भी हर लूंगी पीड़ा
मान तेरा बढ़ाऊंगी, पापा को सम्मान दिलाऊंगी
मां मुझे आने दो, मां मुझे आने दो।

*****

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा राजभाषा वैजयंती पुरस्कार

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए दिनांक 10.01.2018 को **'राजभाषा वैजयंती पुरस्कार-2015-16'** के अन्तर्गत वाप्कोस को **'प्रथम पुरस्कार'** स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही कार्यालय के राजभाषा प्रभारी के रूप में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि. व मा.स.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (राभा) को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र श्री संजय कुंडु, संयुक्त सचिव (पीपी), जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि. व मा.स.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रदान किया गया।

इसी क्रम में द्वितीय पुरस्कार नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, भोपाल तथा तृतीय पुरस्कार केन्द्रीय भू-जल बोर्ड, फरीदाबाद को प्रदान किया गया।

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुड़गांव के तत्वावधान में राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास (का.), गुड़गांव के मार्गदर्शन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुड़गांव के तत्वावधान में दिनांक 23 फरवरी 2018 को राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 'ऑडिटोरियम' इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, अनुसंधान एवं विकास परिसर, सेक्टर 16, एनएच-8, गुड़गांव, हरियाणा में किया गया। यह राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह आठ सदस्य कार्यालयों नामत: वाप्कोस लिमिटेड, पावर ग्रिड कार्पोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड, राइट्स लिमिटेड, इंजीनीयर्स इण्डिया लिमिटेड, भारतीय सुरक्षा संस्थान, एचपीसीएल, इण्डियल आयल, प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में **माननीय श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** को आमंत्रित किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईआईएल, निदेशक (मानव संसाधन), ईआईएल, कार्यकारी निदेशक (परि. व मा. सं. वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वाप्कोस लिमिटेड और उप निदेशक (कार्यान्वयन) उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय-I, राजभाषा विभाग मंचासीन गणमान्य अतिथि थे। समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके व केन्द्रीय विद्यालय-1, सेक्टर-14 की छात्राओं द्वारा मधुरिम सरस्वती वंदना द्वारा किया गया। नराकास, गुड़गांव की वार्षिक पत्रिका **'राजभाषा अनुराग'** का विमोचन मुख्य अतिथि श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के कर कमलों द्वारा किया गया। सभी सदस्य कार्यालयों के वर्ष भर के क्रियाकलापों के साथ-साथ सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा रचित रोचक कहानियां/लेख/कविताएं आदि शामिल करते हुए इस वार्षिक पत्रिका को प्रकाशित किया गया है। समारोह में सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के कर कमलों से नराकास, गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं व विभिन्न श्रेणियोंमें कार्यालयों को शील्ड/प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

नराकास पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

नराकास पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

सदस्य सचिव, नराकास (का.), गुड़गांव ने नराकास द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों के संबंध में संक्षेप में माननीय मुख्य अतिथि व उपस्थिति सभी सदस्यों को अवगत करवाया ।

सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने अपने अभिभाषण में कहा कि नराकास के सदस्य कार्यालयों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र अथवा हिन्दी भाषा में विविध क्षेत्रों से संबंधित विषयों पर पुस्तकें लिखने व प्रौद्योगिकी से संबंधित विषयों पर पैम्फ्लैट आदि पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए । उन्होंने कहा कि इस नराकास में सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, अनुसंधान संस्थानों के अतिरिक्त अस्पताल, केन्द्रीय विद्यालय भी है जिनमें मूल रूप से हिन्दी का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है उदाहरण के तौर पर यदि कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पतालों की बात कि जाए तो वहां आने वाले लगभग सभी लोग हिन्दी भाषा भाषी होते है ऐसे में यदि उनको अंग्रेजी पैम्फ्लैट दिए जाए तो सही नहीं होगा उनके लिए पैम्फ्लैट आदि हिन्दी में ही तैयार किए जाने चाहिए। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए मूल रूप से हिन्दी में कार्य करना चाहिए। हमें स्वत: ही हिन्दी के प्रति सर्मिपत हो कर कार्य करना चाहिए। सभी नराकासों को सक्रिय रूप से कार्य करते हुए राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने चाहिए। उन्होंने शील्ड/प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले कार्यालय/विजेताओं को बधाई दी।

समारोह के अंत में कार्यकारी निदेशक (परि. व मा.स.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वाप्कोस लिमिटेड ने माननीय मुख्य अतिथि श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का सम्मेलन में पधारने व अपने प्रेरणादायक शब्दों से उपस्थित अधिकारियों के ज्ञानोपार्जन के लिए धन्यवाद दिया। साथ ही समारोह के सफल आयोजन के लिए ईआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, समारोह के आयोजन में कार्यरत ईआईएल व वाप्कोस लिमिटेड के अधिकारियों तथा उपस्थित सभी सदस्यों के सहयोग हेतु धन्यवाद दिया।

गीता शर्मा

सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

******

मैं आपकी अपनी हूं, सरल हूं,

सहज हूं, हिन्दी अपनाकर तो देखिये।

वाप्कोस में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2018 का आयोजन

पी.वी.सुषमा
प्रमुख (आंतरिक लेखा)

वाप्कोस में वर्ष 2013 से हर वर्ष नए-नए रूप में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया जा रहा है जिसका श्रेय वाप्कोस मैनेजमेंट विशेषतौर पर हमारे सीएमडी सर श्री आर.के.गुप्ता जी को जाता है। इस वर्ष भी सीएमडी सर के मार्ग दर्शन में 8 मार्च, 2018 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला कार्मिकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 'उद्गमन' में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था टीम वर्क के फायदों से परिचित कराना अर्थात किस प्रकार एकजुट होकर कार्य करने से कार्य आसानी से और कम समय में किया जा सकता है। इस अवसर पर सीएमडी सर ने महिला कार्मिकों को संबोधित करते हुए कहा कि एक साथ मिलकर काम करने से कोई भी काम अच्छे तरीके से और कम समय में पूरा किया जा सकता है। आज का प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी पर आधारित है। समय का सदुपयोग आपको आगे बढ़ने में मदद करेगा क्योंकि टीम वर्क से कार्य निखरता है और आपका कौशल बढ़ता है। एक दूसरे के साथ कॉर्डीनेशन करते हुए काम करने के कई फायदे होते हैं। हमें अपने व अन्य व्यक्तियों की कार्यक्षमता का पता चलता है और हम एक दूसरे के अनुभवों और योग्यता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। टीम वर्क ही आप में ऊर्जा का संचार करता है जिससे आप हर क्षेत्र में कार्य करने के योग्य हो सकोगे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन को विराम दिया। सीएमडी सर के संबोधन से सभी महिला कार्मिक बहुत ही प्रोत्साहित हुईं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में टीम वर्क का किसी भी कार्य पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ता है, इसे खेलों के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से समझाया गया कि कार्य में थोड़ा कमजोर व्यक्ति और थोड़ा होशियार व्यक्ति आपस में मिलकर कार्य करें तो कोई भी कार्य कम समय में बहुत बखूबी से पूरा किया जा सकता है क्योंकि टीम वर्क ही टीम की शक्ति होती है और टीम की इसी शक्ति में ही छिपी होती है टीम की कामयाबी और यह कामयाबी बिना ऊर्जा के संभव नहीं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस लिमिटेड के दिल्ली-गुड़गांव स्थित कार्यालय से ही नहीं अपितु क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों से भी लगभग 250 महिला कार्मिकों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दो सत्र थे जो टीम वर्क के विभिन्न मनोरंजक खेलों से भरे हुए थे।

श्रीमती अंशुल ने मंच संभाला और प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम सत्र की शुरूआत की। प्रथम सत्र का आरंभ मुख्य अतिथि, सीएमडी सर व अन्य उपस्थित उच्चाधिकारियों का अपनी परम्परा के अनुसार तिलक लगा कर स्वागत करने के बाद मुख्य अतिथि डा0 मीना मिश्रा व अन्य उंच्चाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। उसके बाद मुख्य अतिथि डा0 मीना मिश्रा, सीएमडी सर व अन्य उच्चाधिकारियों का पुष्प गुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। बैकग्राउंड में मधुरिम ध्वनि में बज रहा सु-स्वागतम् गीत सभी के मन को मोह रहा था। श्रीमती निम्मी भट्ट ने अपने स्वागत अभिभाषण में बताया कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरूआत 1900 के आरंभ में हुई थी और काफी संघर्षों के बाद वर्ष 1913 से हर वर्ष 8 मार्च विश्व भर में महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस विश्वस्तर पर महिलाओं के अतीत व वर्तमान की उपलब्धियों को उजागर करने का अवसर प्रदान करता है। आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहराते हुए शीर्ष पदों पर आसीन हैं और अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, अथक परिश्रम व अदभुत साहस के साथ अपनी पहचान बनाने में सफल हुई हैं। नई और आधुनिक शिक्षा ने नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने का अवसर दिया जिसकी बदौलत आज हम सब यहां एकत्रित हुए हैं। आज के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्साह और जोश के साथ भाग लेना हमारी एक नई ऊर्जा को दर्शा रहा है, जिसके लिए हम सब सीएमडी सर का तहेदिल से धन्यवाद करते हुए उनके सम्मान में दो पक्तियां समर्पित करते हैं :-

किया विश्वास जो हम पर, इसे पूरा कर दिखा देंगे
अपने हौसलों के बल पर हम, अपनी प्रतिभा दिखा देंगे।
मिला है मंच तुम्ही से हमको, इस मंच को अपना बना लेंगे।
हिम्मत, लगन, स्नेह, त्याग से, टूटी उम्मीदों में भी जान डाल देंगे।
जो कहते खुद को सितारा हैं, जगमगा कर उनके सामने ही
चमक कर देंगे उनकी फीकी और सूरज खुद को बना लेंगे।

तत्पश्चात् डा0 मीना मिश्रा को स्टेज पर आमंत्रित किया गया, उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि जिस किसी ने भी आज के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को 'ऊर्जा' का नाम दिया है उसको करबध नमन है क्योंकि यह शब्द 'ऊर्जा' नारी का प्रतीक है। नारी अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निभा रही है चाहे वह घर हो या आफिस, हर क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपना कार्य कर रही है।

सीएमडी सर, निदेशक (वित्त), कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.), कार्यकारी निदेशक (ग.सं.,पर्या. व नि.प्र.) तथा कार्यकारी निदेशक (ज.सं.वि.) ने अपने अभिभाषण से सभी महिला कार्मिकों को प्रोत्साहित किया।

अब शुरू हुआ ऊर्जा से भरा हुआ टीम वर्क के खेलकूद का सिलसिला। इवेंट मैनेजमैंट के कार्मिकों ने बहुत ही शानदार ढंग से हमें अलग-अलग तरीके के खेल खिलाने शुरू किए जो हमें आपस में मिलकर अपनी टीम को जीत दिलाने के लिए खेलने थे। इन खेलों में सबने बड़े उत्साह से भाग लिया और सब अपनी उम्र भूलकर खेलों का मजा लेने लगे। बचपन में खेले खेलों का आज दुबारा टीम वर्क के नए रूप के साथ खेल कर बहुत मजा आया। कई तरह के खेल खेलने के बाद सबको थोड़ी थकावट होने लगी और लंच का समय भी निकट आ रहा था।

श्रीमती पूजा कपूर ने प्रथम सत्र का समापन करते हुए डा0 मीना मिश्रा का धन्यवाद किया जिन्होंने अपने अति व्यस्त शैड्यूल में से समय निकालकर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। आगे उन्होंने सीएमडी सर को विशेष रूप से धन्यवाद करते हुए कहा कि सर का यह आइडिया बहुत ही यूनीक था जिसका हम सबने भरपूर मजा लिया और बहुत कुछ सीखा। इसके साथ ही सभी उच्चाधिकारियों का इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद किया।

लंच के पश्चात् इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का दूसरा सत्र आरंभ हुआ। इस सत्र की शुरूआत सर्वप्रथम मुख्य अतिथि श्रीमती रीमा सिंघल को तिलक लगा कर व पुष्पगुच्छ भेंट करके की गई। सुश्री इंडिका ने इस सत्र की मुख्य अतिथि श्रीमती रीमा सिंघल व डा0 मीना मिश्रा को धन्यवाद किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस प्रशिक्षण सत्र की शोभा बढ़ाई तथा सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिससे सभी महिला कार्मिक प्रसन्न व प्रेरित हुईं। सुश्री इंडिका ने सीएमडी सर का स्वागत करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया कि उन्होंने टीम वर्क का महत्व समझाने के लिए एक अनोखे रूप में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी महिला कार्मिकों को एक ही स्थान में एकत्रित करके महिला दिवस को एक उत्सव के रूप में मनाने का अवसर दिया।

सुश्री इंडिका ने आगे कहा कि आज का दिन अपने नाम की तरह ऊर्जावान रहा। आज हमने बहुत कुछ सीखा जैसे एक टीम कैसे काम करती है। टीम में कुछ सदस्य शक्तिशाली होते हैं तो कुछ कमजोर। एक टीम लीडर वही होता है जो सभी सदस्यों को साथ लेकर चले। आज के दिन की एक-एक गतिविधि हमें बहुत कुछ सिखाती है। चाहे वे टग आफ वार हो या प्लास्टिक की पाइप से टावर बनाना। एक टीम हारती है तो एक टीम जीतती है। हार से निराश नहीं होना चाहिए। हार से हमें आगे बढाने की सीख मिलती है तो जीत के बाद हमें अंहकार नहीं करना चाहिए। कम समय में हमने सीखा कि समय प्रबंधन करके हम किस प्रकार जीत हासिल कर सकते हैं।

महिला दिवस की झलकियां

महिला दिवस की झलकियां

इसके बाद सुश्री इंडिका ने सभी को खेल के अगले सत्र के लिए आमंत्रित किया। सभी महिला कार्मिक पुन: खेल के मैदान में पहुंच गईं। सभी इन खेलों को मंत्रमुग्ध हो कर खेलते हुए अपने बचपन में लौट गईं और खेलों में ऐसी डूबी कि उन्हें अपनी उम्र का एहसास भी न रहा। महिलाओं को इतनी फुर्ती व तन्मयता से हर खेल को खेलते हुए देखकर लगा कि हमारे कार्यालय में बहुत-सी प्रतिभाएं छिपी हुई हैं जो इस अनोखे प्रशिक्षण कार्यक्रम से सब के सामने उजागर हुईं। कार्यालय के कार्य के हर क्षेत्र को बखूबी निभाते हुए महिला कार्मिकों ने इस जिम्मेदारी को भी कुशलतापूर्वक निभाया। इसके बाद श्रीमती रीमा सिंघल जी ने अपने अभिभाषण द्वारा सभी महिला कार्मिको का उत्साहवर्धन किया। श्रीमती रीमा सिंघल जी के उत्साहवर्धक अभिभाषण के बाद श्रीमती सुदेश खेमानी, उप मुख्य प्रबंधक द्वारा एक कविता सीएमडी सर के सम्मान में प्रस्तुत की गई।

खेलकूद के इतने मनमोहक कार्यक्रम के साथ-साथ खान-पान की जो व्यवस्था की गई थी उसे देखकर हम सब आश्चयर्चकित हो गए। सबने बेफ्रिक हेकर अंत तक खाने-पीने की हर चीज का भरपूर आनंद लिया। हम सभी महिला कार्मिक इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन से जुड़े हर एक अधिकारी का इतने स्वादिष्ट व्यंजनों व सुव्यवस्थित कार्यक्रम के लिए तहेदिल से धन्यवाद करते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे सत्र का समापन श्रीमती पी.सुमना ने मुख्य अतिथि श्रीमती रीमा सिंघल, डा0 मीना मिश्रा, सीएमडी सर व उच्चाधिकारियों को अपना कीमती समय हमें देने और हमारा हौंसला बढ़ाने के लिए उपस्थित होने पर धन्यवाद दिया। उन्होंने हर वर्ष नए नए रूप में महिला दिवस पुरस्कार स्वरूप दिए जाने के लिए सीएमडी सर का विशेषतौर पर धन्यवाद किया।

अंत में महिला कार्मिकों को मोमेन्टो वितरित किए गए जिसे देख महिला कार्मिकों के चेहरों पर रौनक आ गई। ऊर्जा से भरे प्रशिक्षण के दूसरे सत्र का समापन जलपान द्वारा हुआ। यह एक ऐसा भव्य प्रशिक्षण कार्यक्रम था जिसकी आज तक किसी ने कल्पना नहीं की थी परन्तु हमारे सीएमडी सर ने हम महिला कार्मिकों की इस कल्पना को सच कर हमारे आत्म विश्वास को और मजबूत कर दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से हमने अपनी ऊर्जा के साथ टीम वर्क में काम करने के जो फायदे हैं उनके बारे में बहुत कुछ सीखा। सीएमडी सर हमारे कुशल पथ-प्रदर्शक हैं हम विश्वास दिलाते हैं कि उनके मार्गदर्शन में हम वाप्कोस को नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे। हम सभी महिला कार्मिक टीम वर्क पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अंर्तमन से उनका धन्यवाद करती हैं।

****

तुर्गा: एक पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर परियोजना

रमेश चन्द्र, कनि.प्रोग्रामर
तुर्गा परियोजना कार्यालय
कोलकाता

तुर्गा पंप स्टोरेज परियोजना तुर्गा नाला के ऊपर प्रस्तावित है जो कि पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में बाघमुंडी ग्राम के पास अवस्थित अजोध्या पहाड़ी के दक्षिण-पश्चिमी भाग मे स्थित है। यह परियोजना WBSEDCL द्वारा चिन्हित चार परियोजनाओं में से एक है, जोकि तुर्गा नाले के पानी का उपयोग करके पंप स्टोरेज योजना के द्वारा पीक समय के लिए बिजली का उत्पादन करना प्रस्तावित है।

तुर्गा पंप स्टोरेज परियोजना 1000 मेगावाट बिजली उत्पादन करने के लिए एक भूमिगत पावर हाउस, ऊपर की तरफ एक अपर रॉकफिल डैम (पुराना टरपनिया ग्राम के समीप), एक लोअर कंक्रीट ग्रेविटी डैम और एक रॉकफिल डैम (मौजूदा सिंचाई डैम के समीप गोसाइडीह ग्राम में) के निर्माण करने की परिकल्पना की गई है।

WBSEDCL द्वारा बेसिन में चिन्हित चार पंप स्टोरेज योजनाएं निम्न हैं जो अपने क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं:

1. पुरुलिया पंप स्टोरेज योजना, 900मेगावाट (संचालन)
2. तुर्गा पंप स्टोरेज योजना, 1000मेगावाट (पूर्व निर्माण स्टेज)
3. कथलाजल पंप स्टोरेज, 1485मेगावाट (प्रारम्भिक अध्ययन)
4. बंधु पंप स्टोरेज योजना, 600मेगावाट (पीएफ़आर स्टेज)

तुर्गा पंप स्टोरेज स्कीम दूसरी पंप स्टोरेज स्कीम है जिसे WBSEDCL द्वारा अजोध्या पहाड़ियों में चिन्हित की गई चार योजनाओं में से लिया गया है जोकि शुद्ध पम्प स्टोरेज योजना (रिसर्कुलेशन प्रकार) का है। चूंकि तुर्गा पम्प स्टोरेज परियोजना (तुर्गा पीएसपी) के ऊपरी और निचली जलाशयों का प्रभावी भंडारण क्षमता प्रतिदिन पांच (5) घंटे के विद्युत उत्पादन के बराबर है, इसलिए तुर्गा पीएसपी में साप्ताहिक या मौसमी आधार पर काम करना संभव नहीं है। इसलिए, परियोजना को दैनिक आधार पर परिचालन प्रस्तावित है। केस्टोबाजार नाला पर स्थित पुरुलिया पंप स्टोरेज परियोजना (4 X 250 मेगावाट) 2007-08 से ही सफल संचालन में है।

पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट एक प्रकार का पनबिजली उत्पादन संयंत्र है जो पानी के रूप में ऊर्जा को भंडारित करता है। यह कम ऊंचाई के जलाशय से एक ऊंचे जलाशय तक पानी को

ऑफ-पीक समय में पंप करता है और पीक समय के दौरान उसी पानी का उपयोग करके बिजली उत्पन्न करता है। यह वर्तमान में विद्युत ऊर्जा की बड़ी मात्रा में स्टोरेज के सबसे प्रभावी साधनों में से एक है।

बिजली देश के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे में से एक है। हमारा सकल घरेलू उत्पाद पर्याप्त मात्रा में बिजली की उपलब्धता पर निर्भर करता है आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में लगभग हर साल बिजली की मांग इसके उत्पादन से कहीं ज्यादा है, परिणामस्वरूप औद्योगिक उत्पादन में नियमित लोड शेडिंग और व्यवधान उत्पन्न होता है।

हर साल नए-नए विद्युत संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं, लेकिन साथ ही साथ बिजली की खपत भी बढ़ती जा रही है। दूसरी समस्या है, दिन और रात के समय में, सप्ताह के दिनों और छुट्टियों के दिनों में, इस्तेमाल होने वाली बिजली में भिन्नता। अगर विद्युत उत्पादक कंपनी अधिकतम मांग की पूर्ति के लिए बिजली उत्पादन करे तो उसमे बहुत ही ज्यादा खर्च आएगा एवं आमदनी बहुत ही कम होगी क्योंकि ज़्यादातर बिजली अप्रयुक्त रह जाएगी। इस समस्या का निदान तभी हो सकता है जब ऑफ पीक समय में उत्पादित बिजली का संचयन किया जाए। लेकिन विद्युत ऊर्जा को उसी अवस्था में ज्यादा मात्रा में संचयन करने का कोई तरीका उपलब्ध नहीं है, लेकिन एक तरीका है जिसमे विद्युत ऊर्जा को स्थितिज ऊर्जा (Potential Energy) में बदल कर संचयन किया जा सकता है और यही तरीका पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट के रूप में सामने आया है।

पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट है क्या?

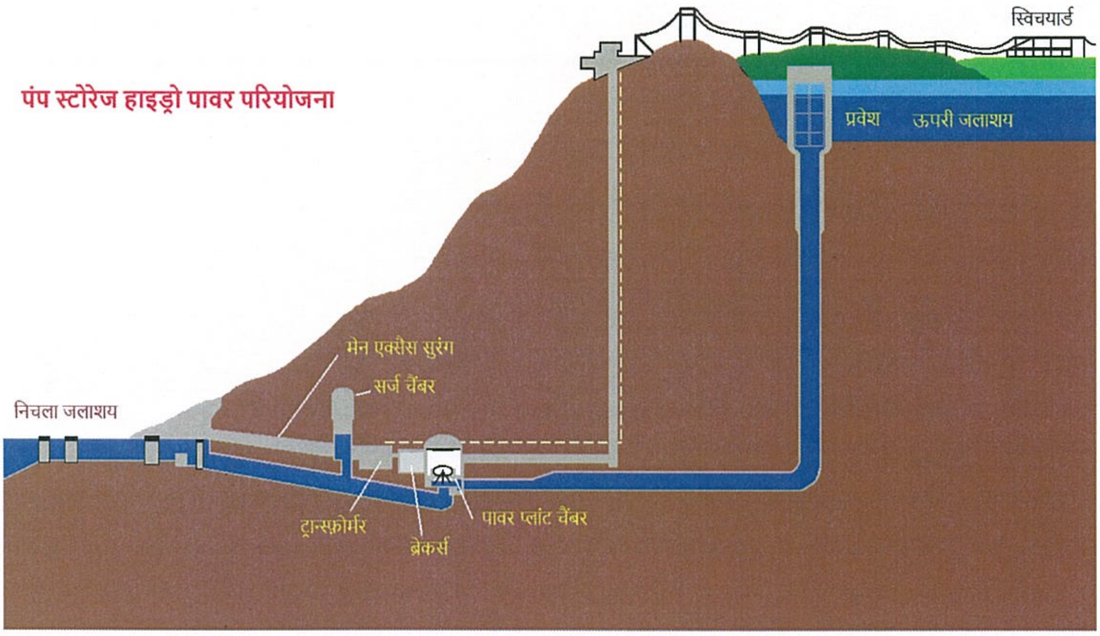

वाप्कोस

पंप स्टोरेज योजना का बुनियादी सिद्धान्त, बिजली घर से नीचे की ओर के कम ऊंचाई के जलाशय से एक ऊंचे जलाशय तक पानी को, उस समय जिस समय बिजली की मांग कम हो, जमा करना एवं जिस समय बिजली की मांग ज्यादा हो उस समय ऊंचे जलाशय के पानी को नियंत्रित तरीके से उपयोग कर बिजली उत्पादन करना है। पानी को कम ऊंचाई के जलाशय से ऊंचे जलाशय में पहुंचाने के लिए बिजली नजदीक के या दूर के किसी भाप बिजली संयंत्र से विद्युत ग्रिड के माध्यम से प्राप्त होती है।इसमे टर्बाइन जेनेरेटर सेट को इस तरह से डिज़ाइन किया जाता है कि पीक समय में, ऊपरी जलाशय में पानी के रूप में संचयित स्थितिज ऊर्जा का उपयोग कर टर्बाइन, बिजली का उत्पादन करे एवं ऑफ-पीक समय में पानी को ऊपरी जलाशय में पहुँचने के समय, दूसरे संयंत्र द्वारा उत्पादित अतिरिक्त बिजली का उपयोग कर यह पंप की तरह काम करे। पानी का आने-जाने का रास्ता दोनों समय में, बियुत उत्पादन के समय एवं पुनः पम्पिंग समय, एक ही होता है।

पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट के प्रकार :

शुद्ध पम्प स्टोरेज योजना (रिसर्कुलेशन प्रकार) इस तरह की परियोजना में निचले एवं ऊपरी जलाशय में पानी के रिसर्कुलेशन से विद्युत् उत्पन्न किया जाता है। दोनों ही समय, विद्युत उत्पादन एवं पुनः पम्पिंग, समान मात्रा में पानी का उपयोग होता है। वास्पीकरण एवं रिसाव से हुई क्षति की पूर्ति ऊपरी या निचली जलाशय मे मिलने वाली छोटे नदी या झरने से होती है। इसके बिजली घर में कोई पारंपरिक विद्युत उत्पादन नहीं होता है। विद्युत का उत्पादन केवल पीक-लोड के समय किया जाता है। दोनों जलाशयों की क्षमता लगभग समान होती है। इस योजना को उन जगहों पर और अधिक व्यवहार्य पाया जाता है जहां पनबिजली क्षमता पहले से विकसित की जा चुकी है।

मिश्रित पम्प स्टोरेज योजना: जब एक पारंपरिक जलविद्युत परियोजना एवं पम्प स्टोरेज योजना को मिला दिया जाता है तो उसे मिश्रित पम्प स्टोरेज योजना कहते हैं। इस तरह की योजना में ऊपरी जलाशय या तो बहुत ही बड़ा होता है या पर्याप्त मात्रा में जल प्रवाह पूरे वर्ष उपलब्ध रहता है, जिससे की वर्ष के अधिकांश महीनों मे विद्युत उत्पादन हो सके। इस मामले में, यूनिट को ऑफ पीक-समय के दौरान कुछ समय के लिए जनरेटर मोड में संचालित किया जा सकता है। क्योंकि, पम्पिंग के लिए इस्तेमाल होने वाले पानी की तुलना में बिजली उत्पादन के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पानी अधिक है। कुछ प्लांट्स में, मॉनसून के दौरान पर्याप्त पानी उपलब्ध होता है पर जिन महीनों में कम वर्षा होती है उस दौरान पानी काफी कम हो जाता है। इसलिए जब पर्याप्त पानी उपलब्ध हो तब पारंपरिक तरीके से विद्युत् उत्पादन किया जाता है और कम वर्षा वाले महीनों में पम्प स्टोरेज योजना को अपना लिया जाता है।

पारंपरिक जल विद्युत संयंत्रों की स्टोरेज क्षमता के अनुपूरक पंप स्टोरेज योजना: कुछ ऐसी भी जगहें हैं जो भौगोलिक बनावट के हिसाब से जल विद्युत संयंत्र बनाने के लिए बहुत ही उपयुक्त हैं,

लेकिन पानी कि उपलब्धता कम है जिसके कारण बिद्युत संयंत्र कि क्षमता कम है। साथ ही साथ नजदीक के नदी या झरने में बहुतायत जल उपलब्ध है जहाँ से पानी को पंप करके ऊँचें जलाशय में पहुंचाया जाता है, जिससे विधुत उत्पादन किया जाता है एवं पम्पिंग के लिए बिजली ऑफ-पीक समय में पारंपरिक जलविद्युत से लिया जाता है।

पंप स्टोरेज हाइड्रो पावर प्लांट के फायदे

- पम्प स्टोरेज हाइड्रोपावर प्लांट, ताप विद्युत प्लांट के एक पूरक के रूप में सामने आया है।
- पम्प स्टोरेज हाइड्रोपावर प्लांट ने उन जलाशयों की उपयोगिता को बढ़ा दिया है, जिनमें शायद पारम्परिक जलविद्युत योजना सफल नहीं हो पाती।
- यह विधि परंपरागत प्लांट की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक किफायती है खासकर जब जलविद्युत संयंत्र की लागत अपेक्षाकृत कम है और तापीय संयंत्र में ईंधन की लागत अधिक है।
- पंप स्टोरेज संयंत्र सभी पनबिजली विद्युत संयंत्रों में अद्वितीय हैं क्योंकि कोई बहते पानी के स्रोत आवश्यक नहीं हैं। एक बार जब ऊपरी या निचला जलाशय भर जाता है तो केवल वाष्पीकरण और रिसाव से हुए नुकसान की भरपाई के लिए केवल छोटे जलस्रोत की आवश्यकता होती है।
- पम्प स्टोरेज प्लांट का परंपरागत जल-विद्युत प्रतिष्ठानों से एक और उल्लेखनीय लाभ है। परंपरागत जल-विद्युत प्रतिष्ठानों में, जब जलाशय का स्तर बहुत कम हो जाता है, तो बिजली का उत्पादन बाधित हो जाता है। जबकि पंप स्टोरेज संयंत्रों में जलाशय के लिए ऑफ-पीक समय में पम्पिंग किए गए पानी से बिजली का उत्पादन करने का लाभ होता है।
- उच्च मांग के दौरान प्रति यूनिट बिजली की लागत ऑफ-पीक मांगों के दौरान की तुलना में अधिक महंगा है। इस प्रकार पंप स्टोरेज संयंत्रों के पास अन्य पीक लोड प्लांट (गैस और डीजल बिजली संयंत्र) की तुलना में कम लागत पर बिजली पैदा करने के फायदे हैं। ऑफ-पीक लोड के दौरान जलाशय में पानी वापस पंप किया जाता है (उदाहरण: रात के समय के दौरान) इसलिए वापस पंप करने के लिए आवश्यक लागत सस्ती है।
- पंप स्टोरेज प्लांट की क्षमता, नदी के प्रवाह और मौसमी बदलावों के कारण बाधित नहीं होती है। यह पंप किए गए स्टोरेज संयंत्रों का लाभ है जो सभी मौसमों में पूरे वर्ष संचालित किया जा सकता है।
- थर्मल पावर प्लांट या परमाणु ऊर्जा प्लांट बेस लोड प्लांट के रूप में और पंप स्टोरेज प्लांट पीक-लोड प्लांट के रूप में जो एक दूसरे के करीब तैयार किया गया हैं, पंप स्टोरेज प्लांट

का जलाशय थर्मल इकाइयों को ठंडा करने में उपयोग किया जा सकता है। इनकी निकटता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि स्टीम पावर प्लांट के लिए कूलिंग टावरों की लागत को कम किया जा सकता है क्योंकि पम्प स्टोरेज संयंत्र का जलाशय कुलिंग टावर के रूप में कार्य करते हैं, साथ ही साथ दोनों के नजदीक होने के कारण ऑफ-पीक समय में पंप स्टोरेज संयंत्रों में पॉवर ट्रान्सफर के समय छोटे ट्रांसमिशन लाइन होने के कारण विद्युत का नुकसान भी कम होगा।

तापीय विद्युत संयंत्रों के बायलर को गर्म रखने के लिए काफी मात्रा में ऊर्जा का उपयोग करते हैं। जबकि पंप स्टोरेज संयंत्रों को सेवा के लिए तैयार रखने के लिए कोई अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती है। इन प्लांट्स को तत्काल भार उठाने की उपलब्धता के कारण, पंप स्टोरेज संयंत्रों को विद्युत ग्रिड प्रणाली में आपातकालीन रिज़र्व स्टेशन या पीक लोड स्टेशनों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। जीरो से लेकर पूर्ण लोड तक जाने के लिए, थर्मल स्टेशन को 30 से 60 मिनट की आवश्यकता होती है जबकि हाइड्रो-इलैक्ट्रिक स्टेशनों को ऑपरेशन के लिए 20 से 60 सेकेंड की आवश्यकता होती है। यही पंप स्टोरेज प्लांट का लाभ है।

****

देश-प्रेम

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपनी मां से देश-सेवा की आज्ञा मांगी। मां ने कहा, ''बहुत कठिन काम है बेटा देश-सेवा करना, गद्दी पर बैठना और हुकुमत चलाना ही नहीं, उसमें झाडु-बुहारी से लेकर दुष्टों के संहार तक के कठिन काम भी करने पड़ते हैं। जिस दिन मुझे यह विश्वास हो जाएगा कि तू भी कठिन से कठिन कार्य कर सकता है, उसी दिन आज्ञा दे दूंगी।'' सामने दीपक जल रहा था, पटेल ने उस पर अंगुली रख दी, हाथ जल गया, पर पटेल ने उफ तक नहीं की। मां ने उसका हाथ हटाया और उन्हें छाती से लगाते हुए कहा, ''बेटा, तू देश-सेवा के लिए सहर्ष जा सकता है।

****

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के तत्ववाधान में आयोजित प्रथम राजभाषा सम्मेलन में वाप्कोस की भागीदारी

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा ब्रह्मपुत्र बोर्ड, गुवाहाटी (असम) के सहयोग से दिनांक 07.11.2017 को गुवाहाटी के असम प्रशासनिक स्टाफ कालेज में प्रथम राजभाषा सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालय व मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों/पीएसयू से अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया । वाप्कोस की ओर से निम्न अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया:-

1. श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (राभा)
2. श्री दलीप कुमार सेठी, उप प्रबंधक (राभा)
3. श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक (हिन्दी)
4. श्रीमती शारदा रानी, वरि.सहायक

राजभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) श्री एम.सी. भारद्वाज ने की तथा इस सम्मेलन का कुशल संचालन मंत्रालय में सहायक निदेशक (रा.भा.) के पद पर आसीन श्रीमती वीना सत्यवादी द्वारा किया गया। राजभाषा सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जी.एल. अग्रवाल को आमंत्रित किया गया था जोकि असम के जाने-माने पत्रकार व संपादक है। मंत्रालय के श्री टी. एस मेहरा, आयुक्त (बी एवं बी) सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। सचिव, ब्रह्मपुत्र बोर्ड, प्रोफेसर डॉ पूरन चंद टंडन, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री राजबीर सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान तथा श्री अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, उप मुख्य प्रबंधक, यूको बैंक को सम्मेलन में उपस्थित अधिकारियों से अवगत कराने हेतु आमंत्रित किया गया था । समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके व संस्कार-भारती की कलाकार सुश्री मेघना कलिता द्वारा मधुरिम स्वर में सरस्वती वंदना द्वारा किया गया। मंत्रालय की सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती वीना सत्यवादी ने फुलाम गमोसा और सराई (स्थानीय शब्द) भेंट करके मंचासीन गणमान्य अतिथियों का अभिनंदन किया।

इसके बाद, सम्मेलन की सम्पूर्ण कार्रवाई विधिवत संपन्न हुई। विशिष्ट अतिथि श्री अग्रवाल ने असम में हिन्दी की प्रगति, प्रचार-प्रसार तथा रोजगारोन्मुख विकास के

संबंध में उपस्थित अधिकरियों/कर्मचारियों को संक्षेप में बताया। श्री अग्रवाल व श्री टी. एस मेहरा, आयुक्त (बी. एवं बी) ने पहला राजभाषा सम्मेलन हिन्दीतर राज्य में आयोजित किए जाने के लिए मंत्रालय की सराहना की। अन्य मंचासीन अतिथियों द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन व प्रगति एवं प्रशिक्षण आदि के संबंध में विस्तार से चर्चा की।

समारोह के अंत में, ब्रह्मपुत्र बोर्ड, गुवाहाटी के श्री मोहन कोइराला, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन का समापन हुआ। विशेष प्रस्तुति के तौर पर सम्मेलन के बाद शाम 6 बजे से 8 बजे तक एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने बहुत आनंद लिया।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा पहला राजभाषा सम्मेलन हिन्दीतर राज्य में आयोजित करने हेतु मंत्रालय बधाई का पात्र है। ऐसे राजभाषा सम्मेलनों में हिन्दी के प्रयोग के विषय में अपनी जिज्ञासाओं, कठिनाइयों आदि के संबंध में भिन्न भिन्न लोगों के साथ विचार-विमर्श करने एवं समाधान तलाशने का एक मंच मिलता है और सम्मेलन में पधारे वक्ताओं के अभिभाषणों से उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का ज्ञानोपार्जन होता है। इस प्रकार के सम्मेलनों में राजभाषा से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता के साथ-साथ अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रतिभागिता भी होनी चाहिए ताकि उनका ज्ञानवर्धक हो और सभी हिन्दी के प्रति सर्मिपत हो कर कार्य कर सकें। ऐसे सम्मेलन आयोजित होते रहने चाहिए जिससे सभी अधिकारी/कर्मचारी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकें।

गीता शर्मा

सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

****

उस शिक्षा का क्या मोल है जो हमारे अंदर गलत को सही करने का जुनून और निडरता न पैदा कर सके।

चिरस्मरणीय पल (लेख)

के.एन.द्विवेदी
आरेखण अधिकारी

यह वास्तविक घटना उन दिनों की है जब मैं मिजोरम से वाप्कोस में नियुक्ति हेतु साक्षात्कार के लिए दिल्ली आया था। वर्षा ऋतु अपने पूरे यौवन पर थी, 25 जुलाई, 1989 का दिन था। मैं और मेरा सहयोगी श्री महेन्द्र कुमार खडकवाल 24 तारीख रात की 10 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे। स्टेशन के पास यात्री निवास के आठवें माले पर विश्राम किया व सुबह तैयार होकर पैदल ही वाप्कोस, कैलाश बिल्डिंग पहुंचे। नियुक्ति हेतु साक्षात्कार के पश्चात् हम दोनों एक दिन के लिए अपने गृहक्षेत्र यानी उत्तरांचल गए तदोपरांत 27 तारीख को वापस दिल्ली पहुंचे। रेलवे आरक्षण के पश्चात् 29 तारीख को गुवाहाटी पहुंचे। भयानक बरसात ने पूरे असम तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र को आगोश में ले लिया था। हमने गुवाहाटी में पहुंचकर विश्राम किया क्योंकि आगे का सफर कठिनाइयों भरा था। शाम को ही सूचना मिली कि आज सिल्चर शहर विद्युत उपलब्ध न होने के कारण बन्द है। सारी परिवहन सेवाएं बाधित हैं। फिर दूसरे दिन सूचना मिली कि सारा शहर जलमग्न हो गया है, अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ आ गई है मौसम अत्यंत उमस भरा था इसलिए दूसरे दिन भी गुवाहाटी में रूकना पडा । पुनः तीसरे दिन किसी तरह सड़क मार्ग से शिलांग जाने की अनुमति मिली । हम दोनों शिलांग पहुंचे व शाम को एक होटल में विश्राम किया । क्षेत्रीय लोगों से जानकारी मिली कि सुबह एक बस सिल्चर जाएगी इसलिए हम अतिभोर में ही बस अड्डा पहुंचकर टिकट हेतु प्रयास करने लगे । कुछ सफलता के बाद बस में बैठकर यात्रा सुबह आठ बजे आरम्भ हुई । यद्यपि शिलांग पूरा पहाड़ी क्षेत्र है किन्तु बारिश की अधिकता से मन अधिक भयभीत था कि कहीं बाढ़ का सामना न करना पड़े और यही घटना घटी, अर्थात शाम 6 बजे पहाड़ी क्षेत्र जहां समाप्त हो जाता है और मैदानी क्षेत्र शुरू हो जाता है हम उस स्थान पर पहुंचे । बस चालक ने आगे जाने से असमर्थता जाहिर कर दी । उस मैदानी क्षेत्र में अनेक गांव, बस्ती आदि स्थित हैं उन्होंने अपनी बाढ़ से सुरक्षा हेतु कच्ची नाव बनाई होती है ये स्थानीय लोग मुसाफिरों को उन्हीं नावों में बैठाकर शहर के निकट पहुंचा रहे थे। चारों तरफ पानी ही पानी था । सभी घर, बस्ती पानी में डूबी हुई थीं । रात का अंधियारा भी अपने पैर पसार रहा था जिससे स्थिति बद से बद्तर होती जा रही थी और इससे भी भयानक हालत ये थी कि इन सभी दशाओं में हमें उस नाव से (जिसमें सिर्फ 4 लोग ही बैठ सकते थे) बराक नदी पार करनी थी और इन हालातों में नदी का जल भयानक रूप धारण किए था । हम सभी मन ही मन ईश्वर को याद कर रहे थे कि अब हमारे साथ न जाने क्या होगा । नाव का खेवनहार ही अब हमारा सब कुछ था । टूटी-फूटी सी नाव में कभी पानी छलक कर अन्दर आ जाता । कपड़े व सामान तो सभी भीग ही गए थे। जैसे ही नाव ने नदी में प्रवेश किया तो नाव का मल्लाह

बोल पड़ा, बाबू जी नाव को मत छोड़ना कस कर पकड़ना। हमारे सारे होश फाख्ता हो गए, पता नहीं इस भयंकर ऊफान मारती नदी में हम कब तक जूझते रहें व कब सामान्य बाढ़ वाले स्थान पर पहुंचे एक अत्यंत झुंझला देने वाला दृश्य था । सभी पेड़, घर, मकान पानी में डूबे थे व रात में ऐसा लग रहा था कि पानी में सभी घूम रहे हैं । खैर जैसे तैसे रात एक बजे शहर में पहुंचे यद्यपि पूरे शहर में घुटनों तक पानी जमा था और किसी तरह हम दोनों एक होटल में पहुंचे। प्यास से बुरा हाल था, होटल वाले ने केवल एक जग पानी दिया, क्योंकि वह भी पानी 40 किमी. दूर से लाया था । बाढ़ की स्थिति ने पेय जल का हाल भी खराब कर दिया था। पुनः दूसरे दिन सूचना मिली कि शायद आज हवाई सफर से आइजल (मिजोरम की राजधानी) जाया जा सकता है इसलिए हम दोनों सिल्चर से 40 किमी. दूर हवाई अड्डे पहुंचे । हमारे साथ वहां दो मित्र और मिल गए । शाम 4 बजे (21 सीटों वाला) फोकर आया और हम चारों उस में बैठ कर उडे । 80 मिनट के सफर के पश्चात् आइजल के ऊपर पहुंचे तो देखा भयंकर वर्षा हो रही है और जहाज के लैंडिंग करने का कुछ भी अवशेष नजर नहीं आ रहा है । इतनी देर में पायलट ने घोषणा कर दी कि हम उतर नहीं सकते व जहाज को कलकत्ता ले जा रहे हैं । हम सभी ने उनसे प्रार्थना की कि हमें वापस सिल्चर ही छोड दें । हमारे पास पैसे भी नहीं बचे थे हम कलकत्ता से वापस कैसे आते । उसने हमारी प्रार्थना सुनी व वापस सिल्चर उतार दिया । पुनः एरोड्रोम अधिकारी से विनय किया कि हमें रात एरोड्रोम में ही विश्राम करने दिया जाए क्योंकि टिकट दूसरे दिन के लिए रिफंड हो गया था । रात को हमने वहीं विश्राम किया । पुनः सुबह टिकट लिया व शाम तक जहाज की प्रतीक्षा की कि शायद आज तो पहुंच ही जाएंगे किन्तु किस्मत ने साथ नहीं दिया । शाम चार बजे कलकत्ता से सिग्नल आया कि जहाज में तकनीकी खराबी के कारण यात्रा स्थगित कर दी गई है । फिर मायूस होकर एयरपोर्ट से एक बस में बैठकर सिल्चर वापस आ गए, उस दिन बारिश नहीं हुई और जलस्तर नीचे आ गया । हमने तय किया कि हम चारों साथ ही चलेंगे । रात आठ बजे सिल्चर पहुंचे फिर टैक्सी स्टैंड गए वहां एक भला मानुष हमारे साथ चलने को तैयार हो गया । उसके पास एम्बेस्डर कार थी । हमने कुछ पूरी सब्जी व खाने का समान लिया व 9.00 बजे सिल्चर से चले । यद्यपि बिजली चमक रही थी व लग रहा था कि बारिश फिर शुरू होने वाली है अभी मुश्किल से हम 40-50 किमी. ही गये होंगे कि बारिश शुरू हो गई। उस भयानक रात व बारिश में 40 किमी. चलने के बाद पहाड़ी रास्ता शुरू हो जाता है । कार ड्राइवर ने भी हमारा मनोबल बढ़ाया व चलता रहा, जहां भी सड़क पर पत्थर आते हम सभी बारी-बारी उतर कर पत्थर हटाते व आगे बढ़ते रहे। भीगना तो हर हाल में था ही पूरे रास्ते बारिश ने हाल बेहाल कर दिया। हम कहीं-कहीं मोड़ पर पहले आगे पैदल ही बढ़ते व टार्च से रास्ता देखते फिर गाड़ी में बैठते और आगे चलते रात ढाई बजे तक यही चलता रहा। एक बार हम उतरे व टार्च से सड़क के मोड़ तक पैदल ही गए तो एक भयानक सी आवाज आने लगी ऐसा लग रहा था जैसे पूरा पहाड़ टूटने वाला हो, पैर मेरे चिकनी मिट्टी में धंस गए थे, मेरा दूसरा मित्र साथ ही था, मैंने जैसे तैसे जोर लगा कर पैर निकाला व कार के पास तक दौड़ गायी और सभी को सावधान किया कि यह पूरा पहाड़ नीचे खिसक रहा है,

तुरंत कार वापस मोड़ों व पीछे चलो। हम मिट्टी से सने कपड़ों सहित कार में बैठे व गाड़ी को पीछे भगाया। गाड़ी को कम से कम दो किमी. तक पीछे ले गए व गाड़ी के अन्दर ही रहे बहुत बुरा हाल था। साथ लाई पूरी सब्जी खाई व सो गए । सुबह 6.00 बजे बी.आर.ओ. की गाड़ी की आवाज आई बुलडोजर भी आए व रास्ता साफ होना शुरू हुआ । दिन के दो बजे तक केवल कार के जाने का रास्ता साफ हुआ। पुनः हम पैदल ही कुछ दूर तक आगे गए फिर गाड़ी में बैठकर शाम 6.00 बजे आइजल अपने निवास पर पहुंचे । हम सातवें दिन गुवाहाटी से आइजल पहुंचे। ऊपर वाले की ही कृपा थी कि हमने साहस नहीं खोया और उसने हमें हर कदम पर परेशानियों से बचाया। यह था वाप्कोस में साक्षात्कार के बाद वापस आइजल पहुंचने का चिरस्मरणीय पल।

जिन्दगी और समय

डॉ. कलाम ने जीवन को बहुत गहराई से देखा, सोचा व समझा और बहुत सी ऐसी बातें कहीं जिन्हें अपने जीवन में अपनाकर कोई भी कामयाबी के शिखर पर पहुंच सकता है। उनके अनमोल वचनों में से कुछ इस प्रकार हैं:-

1. आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।
2. जब हमारे सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जाएं तो यह सफलता की निशानी है।
3. जिन्दगी और समय विश्व के सबसे बड़े दो अध्यापक हैं। जिन्दगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें जिन्दगी की उपयोगिता बताता है।
4. सपने वो नहीं जो हम सोते हुए देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते।
5. इंसान को कठिनाईयों की आवश्यकता होती है क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी है।

****

मृदा प्रदूषण–एक ज्वलंत समस्या

डा0 के.पी.एस.मलिक
अपर मुख्य मृदा संरक्षण अधिकारी
गुवाहाटी कार्यालय

जब हम पर्यावरण प्रदूषण की बात करते हैं तो वायु प्रदूषण तथा जल प्रदूषण पर विशेष बल दिया जाता है परन्तु मृदा प्रदूषण की प्रायः कम ही चर्चा होती है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मृदा कम प्रदूषित है। मृदा प्रदूषित तो है किन्तु मृदा का स्वामी किसान अभी तक उससे अनभिज्ञ है। मृदा प्रकृति द्वारा दी हुई अमूल्य धरोहर है। प्रकृति की गोद में ये पली है और सारे जीव मृदा की गोद में खेल कूद कर बड़े हुए हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण की पक्तियां बहुत ही सार्थक हैं :-

जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण 'धूल भरे हीरे' कहलाए।

हम ऋणी हैं मृदा के। किन्तु हमने मृदा को बहुत ही प्रदूषित कर दिया है। अधिक अन्न उगाने के लिए मिट्टी में जिस प्रकार रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है और सिंचाई करने के लिए जल के जिन स्रोतों का धड़ल्ले से उपयोग किया जा रहा है उससे मृदा प्रदूषित हुई है और भविष्य में उसके और अधिक प्रदूषित होने की संभावना है। फिर भी हमारा किसान देश की आबादी के लिए अन्न, सब्जियां, फल-फूल उत्पन्न करने की होड़ में सभी तरह के जल का प्रयोग करने को बाध्य हुआ है चाहे वह शहरों का गंदा जल (मल-जल) हो या खारा जल। दूषित जल से बार-बार सिंचाई करने से खेतों की मिट्टी में अनेक ऐसे पदार्थ संचित हो जाते हैं जो अंततोगत्वा हानिकारक सिद्ध होते हैं।

किसान जिस गोबर की खाद को तैयार करता है और कृषिजन्य जितने भी अपशिष्ट इधर-उधर पड़े रहते हैं, उससे भी खेतों की मिट्टी प्रदूषित हो सकती है। यही नहीं, गहराई तक यह प्रदूषण अपने पैर फैलाकर भू-जल को भी प्रदूषित कर सकता है। इस प्रकार स्वस्थ मृदा रूग्ण बन रही है। इस दलील में कोई सार नहीं है कि यदि नदियां प्रदूषित हुई हैं, वायु प्रदूषित है तो मृदा भी प्रदूषित हो कर रहेगी। वास्तव में मृदा बहुमूल्य धरोहर है। यदि यह एक बार बनी तो सदा के लिए बन जाती है। वायु बदल सकती है, जल बदल सकता है क्योंकि इनमें गति है किन्तु मृदा अचल है, निश्चल है तब वह चलती है तो क्षरण होता है उसका विनाश होता है, यह भी प्रदूषण ही है।

मृदा प्रदूषण से मनुष्य, पेड़-पौधे और जीव-जन्तु सभी समान रूप से प्रभावित होते हैं। उसमें अनेक न्यूनता लक्षण उत्पन्न होते हैं और रोग जन्म लेते हैं। समस्त प्रदूषकों में से भारी धातुएं ऐसी हैं जो निरन्तर चक्कर काटती रहती हैं और वापिस मिट्टी में लौट आती हैं जबकि कृषि अपशिष्ठ प्राय: विघटनीय उनका पुनर्नवीकरण होता रहता है। ऐसी स्थिति में मृदा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए प्रयास होने चाहिए।

****

होली : प्रेम और स्नेह का त्यौहार

होली या होलिकात्सव का प्रारंभ कब हुआ, इस संबंध में 'नारद पुराण' में एक कथा आती है। दानवराज हिरण्याकश्यप का पुत्र प्रहलाद भगवान का भक्त था। हर क्षण वह भगवान के भजन एवं प्रेम में डूबा रहता था। हिरण्याकश्प नहीं चाहता था कि उसका पुत्र इस प्रकार के आचरण में लीन रहे। वह असुर था, इस कारण वह देवताओं से बैर रखता था तथा उनसे घृणा करता था। उसने बहुत प्रयत्न किया कि उसका पुत्र प्रहलाद उसकी पूजा करे न कि भगवान की। उसने अपने रसोईये द्वारा प्रहलाद को विष दिलवाया, सर्प से डंसवाया, पहाड़ की चोटी से गिरवाया किन्तु उसे तनिक भी क्षति नहीं हुई और वह अपनी टेक पर अडिग रहा। कहा भी गया है:-

जाको राखे साइयां, मारि सके ना कोय।
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय।।

सभी कठिनाईयों में भगवान ने उसकी रक्षा की और वह तप्त कंचलन के सदृश तपकर निकलता। अंत में दानव पिता ने उस भक्त प्रहलाद को अपनी बहन होलिका जिसको आग में न जलने का वरदान मिला था, की गोद में बैठाकर प्रज्जवलित ज्वाला के मध्य बैठा दिया लेकिन यह आश्चर्य हुआ कि वरदान प्राप्त होलिका भस्मीभूत हो गई और बालक हंसता हुआ आग के बीच बैठा रहा, मानो कमल के फूल पर बैठा हो। यह मानवता की राक्षसत्व पर एक महान विजय थी, जिसे देख-सुनकर लोगों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वे आनंद विभोर हो उठे और घर-घर आनंदोत्सव मनाया जाने लगा। इसी दिन से होलिकास्तव मनाया जाने लगा जो कालान्तर में होली कहा जाने लगा।

******

सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका

अमित गुप्ता
मुख्य अभियंता (नदी विकास)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है व मानव का अस्तित्व समाज के बिना असम्भव है। मनुष्य अपने विचारों के आदान प्रदान हेतु व भावों की अभिव्यक्ति पारस्परिक करता है और दूसरों के विचार एवं भावों को जानने की चेष्टा निरन्तर करता रहता है। अन्यथा मानव जाति का समाज में जीवन व्यर्थ है व इसकी परिकल्पना करना भी मूर्खता का प्रमाण है। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मानस भाषा के माध्यम का प्रयोग करता है अर्थात् भाषा व समाज का घनिष्ठ संबंध स्थापित है। समाज भाषा की जननी है व भाषा रहित समाज की कल्पना भी संभव नहीं है। मनुष्य जितनी आत्मीयता के साथ अपनी भाषा में विचाराभिव्यक्ति करता है वह अन्य किसी भाषा में संभव नहीं। इसीलिए किसी महान कवि ने अपनी मधुर वाणी के माध्यम से यह सत्य सम्पूर्ण जगत के सम्मुख रखा है -

'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय के शूल'।

अर्थात् अपनी भाषा का ज्ञान, उसका प्रयोग ही मानव जगत को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक व सम्पूर्ण समृद्वि के पथ की ओर अग्रसर कर सकने में सार्थक है।

भारतवर्ष का विशाल स्वरूप, हजारों वर्ग किलोमीटरों तक व्याप्त क्षेत्रफल, गगनचुम्बी हिमालय की पर्वतश्रृंखला से लेकर कन्याकुमारी तक अथवा कच्छ से कामरूप तक न जाने कितनी भाषाओं का प्रचलन है। सम्पूर्ण राष्ट्र में लगभग 200 भाषाऐं बोली जाती हैं जिनमें 22 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है । इसी लिए महत् कवि ने क्या खूब कहा है -

'दस फलांग पानी बदले
दस कोस पर बदले बोली'

अर्थात विविध भाषाऐं ही भारत की विविधता में एकता का प्रतीक हैं। जिस प्रकार एक उद्यान में अनेकों प्रकार व किस्म के सुमन व्याप्त होकर भी उनकी सुगंध किसी को भी

वंशीभूत कर सकने में सार्थक है उसी प्रकार भारत में नाना प्रकार की बोलियां व भाषाऐं होने के पश्चात् भी राष्ट्र एक माला के रूप में है। इसीलिए तो कहा है कि -

'अनेकता में एकता, हिन्दी की विशेषता'

जिस प्रकार अनेक वाद्य यंत्रों के सुर अलग होने के बाद भी उनकी लय व ताल कर्णों को सुख प्रदान करती है उसी प्रकार एक वास्तविक जन-सम्पर्क भाषा सभी के भावों व विचारों के विन्मय के लिए सर्वोत्तम माध्यम प्रदान करती है।

वस्तुतः संस्कृत भाषा ने सभी भाषाओं को प्रभावित किया है व अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों में संस्कृत को अपने में आत्मसात किया है। संस्कृत में रचित काव्य व महाकाव्य, रचानाएँ जैसे महाभारत, रामायण, वेद, पुराण, माघ, बाण इत्यादि भारतीय अन्य भाषाओं में अनुवादित किये गए हैं । हिन्दी भाषा का उदगम स्वयं संस्कृत से ही हुआ है और यही इसको भारत की अन्य भाषाओं को अपनाने की प्रेरणा देता है । आज संस्कृत का पद हिन्दी ने ग्रहण कर लिया है व सक्षम जन-सम्पर्क भाषा के रूप में विधित है।

हिन्दी में अभिव्यक्ति सरल है व इस भाषा को लिखना व पढ़ना कलिष्ट नहीं है। यह भाषा जन साधारण की भाषा है जो आसानी से बोली व समझी जा सके। आज समस्त भारत में इस भाषा को लगभग 65 करोड जनता से अधिक लोग प्रयुक्त करते हैं। यह भाषा आश्चर्यजनक रूप से हाटों, मेलों, विभिन्न सम्मेलनों से लेकर प्रशासनिक कार्यो, कानूनी प्रक्रियाओं में प्रयुक्त हो रही है। आखिर इसका लचीला स्वरूप तथा सभी विभिन्न भाषाओं को अपने अन्दर आत्मसात् व विलीन करने की क्षमता है जिसने इसे समस्त भारतवर्ष की जन सम्पर्क की भाषा का पद प्रदान किया है।

हिन्दी जन सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित होने के लिए प्राचीन से ही विकार, प्रचार व प्रसार के पथ पर अग्रसर होती रही है। मध्यकाल में अकबर, शाहजहां, जहांगीर के शासनकाल में भी हिन्दी भाषा के महत्व को समझा व मुगल काल में महान कवियों का राज्याश्रय प्रदान किया गया। राजकीय कार्यों में प्रयुक्त होने के कारण यह 'खड़ी बोली' कहलाई । अशोक के शिलाखण्डों में भी विभिन्न भाषाऐ व्याप्त हैं परन्तु लिपि एक ही है। खिल्जी राज्य में हिन्दी का प्रसार, दक्षिण भारत में होने के कारण यह 'दक्खिन हिन्दी' के नाम से प्रसिद्व हुई ।

हिन्दी भाषा के व्यापक प्रयोजन को जानकर महात्मा गांधी जो स्वयं अहिन्दी भाषी थे उन्होने स्वाधीनता संग्राम की लहर में हिन्दी को स्वराज्य व भारत माता की गरिमा एवं गौरव के साथ जोड़ दिया। महात्मा गांधी के अनुसार **'यदि स्वराज्य कुछ अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का है तो अंग्रेजी ही निस्संदेह राष्ट्रभाषा होनी चाहिए अन्यथा यदि स्वराज्य निरक्षरों, निरक्षर बहनों, निर्धनों व अन्त्यजों का है तो हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के स्वरूप में हो।**

भारतीय समाज के महान विदूषी श्री विनोबा भावे जी की धारणा यह है कि अनेक आंदोलनों की बागडोर केवल हिन्दी के द्वारा ही संभव है व उनके अनुसार **'यदि क्रान्ति आंदोलन में कश्मीर से कन्याकुमारी तक व असम से केरल तक मैं भू-दान, ग्राम-दान के विषय में लोगों को हिन्दी द्वारा नहीं समझता तो यह क्रान्ति असंभव थी। केवल मराठी भाषा से तो महाराष्ट्र से भी बाहर आना संभव नहीं है वरन् अंग्रेजी में तो ग्रामों में यह आंदोलन संचालित नहीं किया जा सकता'**।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी ने चिंतन कर यह कहा **'हिन्दी को एक राज्य से दूसरे राज्य की अभिव्यक्ति का माध्यम होना चाहिये'**। अर्थात स्पष्ट है कि यदि गुजरात व बंगला निवासी को पारस्परिक वार्ता व विचार विन्मय करना हो तो वह हिन्दी के कार्यसाधक ज्ञान को प्रयुक्त कर सकता है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्वाधीनता संग्राम के स्वर हिन्दी के माध्यम से सम्मुख आने लगे व हिन्दी साहित्य व इसमें जनसमूह को संबोधित किया जाने लगा। सन् 1829, 10 मई को श्री राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' नामक पत्र का कलकत्ता से प्रकाशन किया। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों से भी हिन्दी भाषा में जन सम्पर्क स्थापित होना स्वभाविक ही था। श्री गोविन्द रघुनाथ दत्ते जी ने सन् 1845 में 'बनारस' अख़बार का प्रकाशन किया व अपने उन्मुक्त विचारों की अभिव्यक्ति की। इसी श्रृंखला में सन् 1950 में तारा मोहन मित्र जी ने 'सुधारक' नामक पत्रिका का प्रकाशन कर व सन् 1890 में पंडित अमृतलाल चक्रवर्ती जी ने 'बंगवासी' पत्र का प्रकाशन कर जन समुदाय के लाभांवित किया व सभी जन साधारण को एक ही भाषा के माध्यम से निकट लाने में बहुमूल्य योगदान दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी को उचित व विशिष्ट स्थान दिलाने हेतु 14 सितम्बर, 1949 को संघ में विधेयक पारित कर हिन्दी को संघ की राजभाषा से सुशोभित किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 व 344 में यह सुनिश्चित किया गया कि तत्कालीन 15 वर्षों के बाद केवल एकमात्र हिन्दी की प्रयुक्त को व सभी प्रशासनिक कार्यों में हीं शनै-शनै

अंग्रेजी विलुप्त हो जाए । परन्तु कुछ राजनैतिक विद्रोहियों सरकार की ढुल-मुल नीतियों व जनसाधारण में हिन्दी को लेकर इसके प्रयोजन में भ्रांतियों के कारणवश यह संभव न हो सका। जिसके कारणवश 1963 (यथा संशोधित 1967) में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया व 1965 के पश्चात् भी अंग्रेजी भाषा को सहभाषा के रूप में उपाधि से न हटाया जा सका।

महात्मा गांधी जी ने इस विषय पर स्पष्ट कहा है कि **'जिस प्रकार अंग्रेजों ने अंग्रेजी को अपनी राष्ट्रभाषा बनाया है उसी प्रकार भारत में हिन्दी को राजभाषा बनाना अनिवार्य है'**।

इसी उपलक्ष्य में महान विचारक श्री बंकिघमचन्द्र चट्टोपाध्याय जी अपनी रचना 'भारतमित्र' द्वारा भी भारतवासियों को संदेश देते हैं कि **'भारत के सभी राज्यों के बीच भाषा द्वारा एकता प्राप्त हो वह सच्चा भारतबंधु है'**। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द जी आदि महान हिन्दी को जन सम्पर्क के रूप में स्वीकृत किया व इस भाषा के माध्यम से ही जनता में प्राण व नई चेतना का संचार किया ।

महात्मा गांधी जी ने अपनी दूरद्दष्टिता का प्रमाण देते हुए 'दक्षिण प्रचार सभा' का आयोजन किया व दक्षिण राज्यों को भी मुख्यधारा से जोडने का महत्वपूर्ण कार्य किया । श्री गांधी जी के अनुसार भाषा जन सम्पर्क के पद पर तभी विराजमान हो सकती है जब उसमें सभी भाषाओं के लिए उपयुक्त स्थान हो व वह जनसाधारण में लोकप्रियता के शिखर पर हो । उनके अनुसार किसी भी जन सम्पर्क व राष्ट्रीय भाषा में निम्नलिखित गुणों का होना अनिवार्य है :-

- जो राजकीय कार्यों में आसानी से प्रयोग में लाई जा सके व सरल हो ।
- जो राष्ट्र के लिए सरल हो ।
- जो धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक स्तरों पर जनता से संबंधित हो ।
- जो स्थाई हो ।
- जिसका जनसमूह में सर्वाधिक प्रयोग हो।

हिन्दी वास्तविक रूप में उक्त सभी कसौटियों पर उचित स्थान प्राप्त करती है व जनता के सम्मुख सम्पर्क भाषा के स्थान पर विराजमान होने की हकदार है।

आज के युग में हिन्दी व्यापक स्वरूप लेकर विश्व स्तर की ओर अग्रसर हो रही है। सम्पूर्ण विश्व में लगभग 150 विश्वविद्यालय हैं जो हिन्दी का ज्ञान प्रदान करते हैं। भारतवर्ष का नाम हिन्दी जगत में निरन्तर उत्कृष्टता की ओर बढ़ रहा है। आज भारत

विश्व में तीसरे स्थान पर है जो सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली राष्ट्रभाषा का प्रयोग करता है। नागपुर, मारीशस, दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी सम्मेलनों से भारत उच्च शिखर पर पहुंच चुका है । आज हिन्दी भाषा न केवल भारत में अपितु अन्य देशों में भी व्याप्त है जिनमें मारीशस, गायना, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, फिंजी आदि मुख्य स्थान पर आसीन हैं। इस प्रकार यदि हिन्दी का प्रचार प्रसार बढ़ता रहा तो निस्संदेह वह दिन अब दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व में जन-सम्पर्क की भाषा हिन्दी अपनी पताका फहराएगी व विश्व स्तर पर इसका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा । मुझे यह विश्वास है कि हिन्दी का प्रसार चाहे वह प्रशासनिक स्तर पर हो या चलचित्रों के माध्यम से, शीघ्र ही इसे विश्व संघ की मान्यता प्राप्त होगी, हमारी ईश्वर से एकमात्र यही याचना है।

****

राष्ट्रीय चिन्ह

भारत का राज चिन्ह सारनाथ स्थित अशोक के सिंह स्तंभ के शीर्ष की अनुकृति है। यह शीर्ष सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित है। मूल स्तंभ में शीर्ष पर चार सिंह (सर्वतोभद्र) है जो एक दूसरे की ओर पीठ किए हुए खड़े हैं। इनके नीचे घण्टे के आकार के पद्म के ऊपर एक चित्रवल्लरी में एक हाथी, गतिमान अश्व, एक वृषभ तथा एक सिंह की उभरी हुई आकृतियां खुदी हैं। इनके मध्य एक धर्मचक्र खुदा है जिसमें 24 आरे हैं।

भारत सरकार ने इस चिन्ह को 26 जनवरी, 1950 को राज्य चिन्ह के रूप में अपनाया व इसके नीचे मुण्डको उपनिषद से लिया गया वाक्य "सत्यमेव जयते" देवनागरी लिपि में अंकित किया है जिसका अर्थ है – 'सत्य की सदैव विजय होती है।'

****

किल्लौल
The Screaming Kids

डा0 डा0 आर.पी.दूबे,
वरि.महा प्रबंधक

घन-घन, घन-घन बादल आया, बादल आया
देखो कैसा अँधेरा छाया,
बादल आया पानी लाया,
बादल आया पानी लाया,
टप-टप, टप-टप रिम झिम, रिम झिम
देखो कैसा सरगम छाया,
पानी बरसा पानी बरसा,
बादल आया पानी लाया,
टन-टन, टन-टन घड-घड, घड-घड
संग में सारे ओले लाया,
बादल आया पानी लाया,
छप-छप, छप-छप बच्चे नाचे, बच्चे नाचे
भूल गए कच्छे बनियान,
अब बारी पापा मम्मी की
पानी बरसा पानी बरसा
बादल आया पानी लाया
देखो कैसा सरगम छाया
नीतू गाए, छोटू नाचे,
सोनू झूमे, श्यामा इठलाए
संग में पापा मम्मी भी गुनगुनाएं
पानी बरसा पानी बरसा
कैसा प्यारा सरगम छाया ।

******

किन्तु वह नहीं आई

केशवानंद द्विवेदी
आरेखण अधिकारी

पलकें बिछाकर सपने संजोकर,
मन में उम्मीद भर कर उसने आस लगाई,
किन्तु वह नहीं आई,

पल-पल, छिन-छिन, दिन-दिन गिनकर
करवट बदल-बदल कर जो उच्छंवास सी आई,
गर्मी की अकुलाहट ने परिंदों की चहचाहट ने
मन के अंधेरों की बौखलाहट ने, उसकी सांस अटकाई
किन्तु वह नहीं आई,

कभी सुबह तो कभी शाम,
कभी रहीम तो कभी राम,
दिनभर की मेहनतों ने, उसकी उपहास उड़ाई,
थक हारकर, शुष्क सांस पर,
मन मसोस कर, उल्ट पैर जब निवास आई,
घनघोर घटाओं ने, विद्युत की गड़गडाहटों ने
चहुँ दिशि शोर वारिषों ने, उसकी जो उम्मीद जगाई,
वह आई तो सही पर, बाद एक मास आई,
सूख गई जब पूरी खेती, बीत गई जब जुलाई,

(समय चक्र पुनि का पछताने। का वर्षा जब कृषि सूखाने।।)

*****

नानी

कु0 विशाखा घई
सुपुत्री श्रीमती आशा घई, पीआरओ

प्यारी सी वह कहानी है,
उन हसीन लब्जों की जुबानी है।
उसकी हर दुआ कबूल है,
उसके कदमों की मिट्टी
जन्नत की धूल है।
उनके बिना मेरे दिल का एक टुकड़ा सा खाली है
वही तो मेरी खुशियों के आंगन की माली है
हीरे-सी सुंदर उसकी कहानी है
वही मेरी नानी है।

बिना दर्द के आंसू बहाए नहीं जाते हैं
बिना प्यार के हसीन रिश्ते निभाए नहीं जाते हैं
यादें वही हसीन हैं
प्यार उसका अफ़ीम है
हाथ और आंख सा हमारा रिश्ता है
वह मेरे लिए फरिश्ता है
मेरी किस्मत की सबसे सुंदर लकीर है
उसके हाथों से सजी मेरी जिन्दगी की खीर
सोने-से लब्जों-सी उसकी कहानी है,
वही मेरी नानी है।
मैं नहीं चाहती सोना, चांदी या हीरे सी कहानी,
मुझे तो सिर्फ चाहिए मेरी नानी।

****

मेरे मन का पंछी

प्रिया
अभियंता, हाइड्रो-पावर

बैठा हुआ था छत पर, रंगीन पंख पसारे
सपने बने थे काजल, आंखों के किनारे
मुठ्ठी में जग को भरने की
ख्वाहिश लिए चला था
मासूम मन ये मेरा, उड़ान भरने चला था।

मजबूत लग रहे थे, तूफान के इरादे
पंछी की हैसियत क्या, वो तो पर्वत को भी हिला दे
बंधुत्व निभाने गरज रहे थे बादल
काले मेघ भी अपने लहरा रहे थे आंचल
टिका रहा वहीं पर, मेरा मन ये बावला सा
गहरी बड़ी थी उसकी, उड़ने की बिपासा
तूफान से उसने बोला, आंखों में आंख डाले
पीछे नहीं हटूंगा, जितना भी तू डराले।

जिद्द अपनी पूरी करने, जो उसने पग बढ़ाए
पूरी ताकत लगाकर पंख अपने फैलाए
चमकती बिजली ने उसकी, आंखें भी चौंधाई
पर ढीठ मन ने मेरे, ताकत और लगाई
हिम्मत देख उसकी, तूफान सहम गया था
हवा से बातें करने, मन ये मेरा उड़ चला था।

ऐसा लगा कि जैसे, पिघलने लगे पहाड़े
मूषक से डर गई हो, किसी सिंह की दहाड़ें
जब टिकी नहीं कुदरत, मेरे हौंसले के आगे
तो क्या बिगाड़ लेगें, ये समाज के धागे
मेरे हौंसले डिगाने, आओ जिसे है आना
मैं भी अड़ी हूं जिद्द पर
अब चांद ही है ठिकाना।

****

नारी क्या है?

रीना गुप्ता
उप मुख्य प्रबंधक (वित्त)

नारी रूप है, श्रृंगार है, गहरा प्यार है,
ममता है, शक्ति है, भक्ति है नारी,
फिर भी अबला है क्यों?
देवी है, दुर्गा है नारी।

बिगड़े तो चण्डी है नारी,
सागर सी अथाह गहरी है नारी,
जल की धारा सी शीतल है नारी,
जल जाने के लिए आहुति है नारी,
सह जाती है हर दुख़ को खामोश होकर,
पी जाती है जुल्मों का कहर भी चुप होकर,
ऐसी बहादुर है नारी।

फूल सी सुकोमल, महकती खुशबू, दहकती ज्वाला,
बहती रहने वाली धारा, मां की ममता, भाई की राखी,
बहन का सपना, साजन की संगिनी,
बूढ़ों की लाठी है नारी।

मानो तो साकार है, वरना निराकार है नारी,
नारी सृजनहार है, नारी पालनहार है,
नारी जो दी है रब ने, जग पर ये
बहुत बड़ा उपकार है।

******

तीन कविताएं

प्रभुनाथ साह, संदेशवाहक

स्वागत है तेरा

चैन देने वाले, अमन देने वाले,
स्वागत है तेरा, स्वागत है तेरा।
दया करने वाले, भला करने वाले,
स्वागत है तेरा, स्वागत है तेरा।

तेरी नजर में हैं सब बराबर,
तूने किया न किसी का निरादर।
अमीरों का स्वागत, गरीबों का स्वागत,
सदा करने वाले स्वागत है तेरा।

संतोष की तू दौलत है देता,
विश्वास की तू ताकत है देता।
भक्ति तथा जीने के ढंग को,
अदा करने वाले स्वागत है तेरा।

समता के सबको पाठ पढ़ाता,
मिलवर्तन से तू रहना सिखाता।
इन्सानियत को जिंदा जगत में,
सदा रखने वाले स्वागत है तेरा।

चैन देने वाले, अमन देने वाले,
स्वागत है तेरा, स्वागत है तेरा।
दया करने वाले, भला करने वाले,
स्वागत है तेरा, स्वागत है तेरा

तेरा धर्म है बस प्यार देना,
मेरा कर्म है सत्कार देना।
सारे जहां से, हर इंसान से,
वफा करने वाले, स्वागत है तेरा।

*****

जीवन की अच्छाई

जात-पात से उठकर देखो,
जलते दीपक से कुछ तो सीखो।
खून का रंग मिलाकर देखो,
मिल जुल कर रहना सीखो।

फल लदे वृक्षों को देखो,
औरों के लिए जीना सीखो।
जात पात में मत उलझो,
जीवन की अच्छाई को समझो।

*****

पानी से तस्वीर

पानी से तस्वीर कहां बनती है,
ख्वाबों से तकदीर कहां बनती है,
किसी भी रिश्ते को सच्चे दिल से निभाओ,
ये जिंदगी फिर वापस कहां मिलती है
कौन किस से चाहकर दूर होता है,
हर कोई अपने हालातों से मजबूर होता है,
हम तो बस इतना जानते है,
हर रिश्ता "मोती "और
हर दोस्त "कोहिनूर" होता है।
इसलिए कहते हैं कि
कोई टूटे तो उसे सजाना सीखो,
कोई रूठे तो उसे मनाना सीखो,
रिश्ते तो मिलते हैं मुकद्दर से
बस उन्हें, खूबसूरती से सजाना सीखो।

*****

जीवन का अर्थ

विमल किशोर
प्रारूपकार
जल संसाधन विकास प्रभाग

एक अदद सर्द सी धूप में था सोच रहा बैठा-बैठा
आंखें मूंदे हुए, शायद और ही किसी कल्पना में
जैसे कोई गहरी झील में गोते लगाता सा
या फिर शांत समंदर सा था बीत रहा रीता-रीता ।

मैं सेंध लगाकर चुपके से ही कूद पड़ा तन्हाई में
उसके मंथन के रहस्य की गहरी सी परछाई में
भंग कर दिया ध्यान उसका और पूछा क्या है मन में
क्यों खुद से खुद का मेल किया, क्यों खोए हो तुम चिंतन में ।

वो बोला मुझसे हे परममित्र क्या अर्थ जाना जीवन का
क्या जान सके हो तुम अब तक क्या ताना-बाना तन-मन का
मैंने कहा हे महात्मन, जरा आप ही बतला दीजिए
इस अज्ञानी के मन में एक ज्ञान की ज्योत जला दीजिए ।

बोला कि जब चलना सीखा तब क्या मंजिल निर्धारित थी
कहना सीखा, सुनना सीखा तब क्या जिंदगी आधारित थी
पर कितने स्वर्णिम पल थे वो जब दिल में कोई भाव न था
आंखों में चंचलता का रस अभाव में भी अभाव न था ।

लकड़ी की छोटी सी गाड़ी और मेरी मां का ममत्व
बस यही सब था अपना जीवन और कैसा अस्तित्व ?
छोटी-छोटी सी खुशियां छोटे-छोटे सपने अपने
छोटे से आंगन में खुश थे जाते नहीं थे इधर बसने उधर बसने ।

मैं बोला गुरूजी आगे चलो मैं समझ गया बाल-वृतांत
क्यों ले बैठे इन बातों को क्यों लहराया समुद्र निशांत
वे बोले लक्ष्य निर्धारण में हम सालों से अब लगे हुए
ये भी जोड़ो, वो भी जोड़ो निन्यान्वें के फेर में पड़े हुए ।

ये छोटा है और वो ऊंचा उसको पूछो, इसको छोड़ो
ये पकड़ लिया वो छूट गया इसको छोड़ो, उसको पकड़ो
मैंने कहा ये दुनिया है दुनियादारी तो निभानी है
जो बचपन था वो बीत गया अब यही जिंदगानी है ।

बोला मित्र कि यह बोलो क्या अर्थ जाना है जीवन का
क्या जान सके हो तुम अब तक क्या ताना-बाना तन-मन का
इस जीवन की असली मंजिल इस जीवन में खुश रहना है
कोई रोक नहीं कोई टोक नहीं स्वछंद नदी सा बहना है ।

कहता है जीवन को जीना ही इस जीवन का अर्थ है
इस अर्थ को समझ वही पाया जो खुश रहने में समर्थ है
माना कि अब बचपन नहीं इसका मतलब ये दौड़ नहीं
कब धूरी छूट जाए इसकी इस जीवन का कोई ठोर नहीं ।

प्रयत्न से आगे बढ़ना अनिवार्य है, करना होगा
पर जीवन के रंग है अनेक सभी रंगों में बिखरना होगा
जब तक जीते हो हर पल को खुश रहकर तुम भरपूर जियो
हर पल ही यह अहसास जगे कि और जियो तुम और जियो ।

****

इंटेंशन कितना ही अच्छा हो, दुनिया प्रेजेंटेशन देखती है ।
लेकिन
प्रेजेंटेशन कितना ही अच्छा हो, ऊपरवाला इंटेंशन देखता है ।।

आंसू क्या है?

रीना गुप्ता
उप मुख्य प्रबंधक (वित्त)

दिल की जुबान हैं ये आंसू
बड़े ही अजीब से, बड़े ही बेमिसाल हैं ये आंसू ।
गम कोई हो तो, झर-झर बरस जाते हैं ये आंसू
खुशी हो कोई तो भी छलक जाते हैं ये आंसू
लाख धीरज रखो बरबस दूध से उबालकर निकल जाते हैं ये आंसू
बड़े ही अजीब से, बड़े ही बेमिसाल हैं ये आंसू ।

मिले कोई मीत तो निकल आते हैं ये आंसू
अगर बिछड़े कोई तो भी रुलाते हैं ये आंसू
बेजबान हैं फिर भी सब कुछ कह जाते हैं ये आंसू
तड़पे अगर कोई तो बँधाते हैं ये धीरज, गम को धो जाते हैं ये आंसू
बड़े ही अजीब से, बड़े ही बेमिसाल हैं ये आंसू ।

विरह के नैनों से सावन की झड़ी लगाते हैं ये आंसू
अकेले में दिलासा दिलाते हैं ये आंसू
चेहरे के आईने में एक सैलाब सा लाते हैं ये आंसू
जब सब साथ छोड़ दें, गले लगाकर सभी गम पी जाते हैं ये आंसू
बड़े ही अजीब से, बड़े ही बेमिसाल हैं ये आंसू ।

******

जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा हिन्दी है।

सेहत का खजाना
मूंगफली का दाना

मूंगफली सेहत का खजाना है साथ ही यह वनस्पतिक प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत भी हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा मांस की तुलना में 1.3 गुना, अण्डों से 2.8 गुना एवं फलों से 8 गुना अधिक होती है। क्या आप जानते हैं कि 100 ग्राम कच्ची मूंगफली में 1 लीटर दूध के बराबर प्रोटीन होता है। मूँगफली में प्रोटीन की मात्रा 25 प्रतिशत से भी अधिक होती है। साथ ही मूंगफली पाचन शक्ति बढ़ाने में भी कारगर है। 250 ग्राम भूनी मूंगफली में जितनी मात्रा में खनिज और विटामिन पाए जाते हैं, वो 250 ग्राम मांस से भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं। आइये जानते हैं मूंगफली के स्वास्थ्य लाभ ।

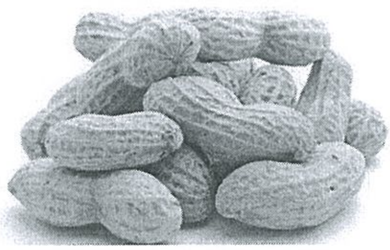

मूंगफली के लाभ –

1. मूंगफली में न्यूट्रियन्टस, मिनरल, एंटी-ऑक्सीडेंट और विटामिन जैसे पदार्थ पाए जाते हैं, जोकि स्वास्थ्य के लिये बहुत ही लाभप्रद साबित होते हैं।
2. इसमें मोनो इनसैचुरेटेड फैटी एसिड पाए जाते हैं जो कि एलडीएल या खराब कोलस्ट्रॉल को कम कर के अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढाते हैं।
3. मूंगफली में प्रोटीन, चिकनाई और शर्करा पाई जाती है। एक अंडे के मूल्य के बराबर मूंगफलियों में जितनी प्रोटीन व ऊष्मा होती है, उतनी दूध व अंडे से संयुक्त रूप में भी नहीं होती।
4. इसकी प्रोटीन दूध से मिलती-जुलती है, चिकनाई घी से मिलती है। मूँगफली के खाने से दूध, बादाम और घी की पूर्ति हो जाती है।
5. एक स्टडी के मुताबिक, जिन लोगों के रक्त में ट्राइग्लाइसेराइड का लेवल अधिक होता है, वे अगर मूंगफली खाएं, तो उनके ब्लड के लिपिड लेवल में ट्राइग्लाइसेराइड का लेवल 10.2 फीसदी कम हो जाता है।
6. अगर आप सर्दी के मौसम में मूंगफली खाएंगे तो आपका शरीर गर्म रहेगा। यह खाँसी में उपयोगी है व फेफड़े को बल देती है।

7. भोजन के बाद यदि 50 या 100 ग्राम मूंगफली प्रतिदिन खाई जाए तो सेहत बनती है, भोजन पचता है, शरीर में खून की कमी पूरी होती है।

8. इसे भोजन के साथ सब्जी, खीर, खिचड़ी आदि में डालकर नित्य खाना चाहिए। मूंगफली में तेल का अंश होने से यह वायु की बीमारियों को भी नष्ट करती है।

9. मुट्ठी भर भुनी मूंगफलियां निश्चय ही पोषक तत्वों की दृष्टि से लाभकारी हैं। मूंगफली में प्रोटीन, केलोरिज और विटामिन के, इ तथा बी होते हैं, ये अच्छा पोषण प्रदान करते हैं।

10. मूंगफली पाचन शक्ति को बढ़ाती है, रुचिकर होती है, लेकिन गरम प्रकृति के व्यक्तियों को हानिकारक भी है। मूंगफली ज्यादा खाने से पित्त बढ़ता है अतः सावधानी रखें।

****

बोधकथा – 'समय'

हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और अमूल्य चीज़ है **समय** क्योंकि जीवन का ही तो दूसरा नाम **समय** है। हम जितना जीवन जीते हैं या व्यतीत करते हैं उतना समय भी तो व्यतीत होता जाता है यानी जीवन और समय एक ही चीज़ हुई। अब इस समय का सही और सार्थक उपयोग किया जाए यह बेहद जरूरी हो जाता है ताकि हमारा जीवन भी सार्थक और सफल हो सके। जीवन में कई अच्छे अवसर आते हैं पर हम अवसर से लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि हम सजग और सचेष्ट नहीं रहते। जनाब मीर हसन ने क्या खूब कहा है कि 'सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं'। कौन सा वक्त कितना कीमती हो क्या पता ?

एक बहुत बड़े सफल आदमी से किसी ने पूछा – आपकी सफलता का राज़ क्या है? उसने कहा- मेरी सफलता का एक ही राज है कि मैं एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाता और हर अवसर का उपयोग करता हूं। अवसर आते ही लपक लेता हूं। उसने फिर पूछा- पर पता कैसे चलता है यह अवसर है क्योंकि जब तक पता चलता है तब तक तो अवसर बीत चुका होता है? लपकने का मौका ही कहां मिलता है? तो वह सफल व्यक्ति बोला- मैं निष्क्रिय निठल्ला नहीं रहता, हमेशा सक्रिय और सावधान रहता हूं और प्रतिक्षण पर मेरी पकड़ बनी रहती है तो जैसे ही कोई अवसर आता है मैं उसे हथिया लेता हूं और उसका भरपूर उपयोग करता हूं इसलिए कभी भूल चूक नहीं करता यानी चूकता नहीं।

****

दीप्ती मोदेकर
प्रथम रेल इंजन ड्राइवर

साभार : भारत की प्रथम महिलाएं

शनिवार, 17 जनवरी की सुबह अंबाला कैंट स्टेशन पर भारी भीड़ जमा थी। भीड़ में शामिल लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। भीड़ में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं व बच्चों की संख्या अधिक थी, मानों मौसम की ठंडक भी उनके उत्साह को ठंडा करने में असमर्थ थी। वे सभी उत्सुक थे भारत की पहली महिला रेल इंजन ड्राइवर की एक झलक पाने को।

तभी प्लेटफार्म पर लगे लाउडस्पीकरों से 2231 डाउनलोड सदभावना एक्सप्रेस के आने की उदघोषणा की गई। देखते ही देखते हाथों में फूल मालाएं व विभिन्न उपहार लिए जन समूह उस प्लेटफार्म पर जुटने लगा, जिस पर सदभावना एक्सप्रेस आने वाली थी। इंजन ड्राइवर दीप्ती मोदेकर स्वतंत्र रूप से इस रेलगाड़ी को बिलासपुर (छत्तीसगढ़) से चलाकर अंबाला कैंट स्टेशन पर पहुंचने वाली थीं।

जैसे ही सदभावना एक्सप्रेस प्लेटफार्म पर आकर रूकी लोगों में दीप्ती को बधाई देने की होड़ लग गई। बधाई देने वालों में रेलवे के अंबाला मंडल के अतिरिक्त मंडलीय प्रबंधक आर.के.सक्सेना ने अधिकारिक तौर पर पुष्पहार के साथ दीप्ती का स्वागत किया। हर कोई उस साहसी महिला की झलक पाना चाहता था, जो पूरी रात एक विशालकाय रेलगाड़ी को चलाकर लाई थी।

दीप्ती के पिता एल.डी.मोदेकर अपने पूरे परिवार के साथ स्टेशन पर उपस्थित थे। छत्तीसगढ़ राज्य के निवासी व रेलवे में ही कार्यरत डी.एल. मोदेकर के लिए वह शायद सर्वाधिक गर्व का दिन था। आखिर हो भी क्यों न। उनकी साहसी एवं संकल्पशक्ति की धनी बेटी ने 'भारत की पहली रेल इंजन ड्राइवर' होने का गौरव जो प्राप्त किया था।

दीप्ती का जन्म 1981 में छत्तीसगढ़ में हुआ था। वहीं उनकी शिक्षा-दीक्षा भी शुरू हुई। शुरू से ही दीप्ती की रूचि उन विषयों में नहीं थी, जिन्हें अधिकतर लड़कियों के लिए माना जाता है। रेलवे कॉलोनी में तो वह अपने भरे-पूरे परिवार के साथ रहती थी। सुबह रेलगाड़ियों की सीटी के साथ उनकी आंख खुलती । दिन भर आती-जाती रेलगाड़ियों की

छुक-छुक में उन्हें मधुर संगीत सुनाई देता। इस माहौल में पलनेवाली दीप्ती की आंखों में कब रेलगाड़ी चलाने का सपना बस गया, उन्हें स्वयं इसका ज्ञान नहीं। वह कहती हैं, ''मैं कुछ ऐसा अनूठा कार्य करना चाहती थी, जिससे मेरे परिवार का नाम रोशन हो। मैंने बचपन से सुना था कि रेलगाड़ी चलाना महिलाओं के वश की बात नहीं। लंबी दूरी तक रेलगाड़ी चलानी पड़ती है। रात के अंधेरे में, घने जंगलों के बीच रेलगाड़ी ले जानी पड़ती है। बीच में कुछ अनहोनी हो जाए तो? इसलिए मैंने भी इस चुनौतीपूर्ण कार्य को करने की मन में ठान ली।''

इस चुनौती को पूरा करने के लिए दीप्ती ने विद्युत अभियांत्रिकी के पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। विद्युत अभियांत्रिकी में स्नातक की उपाधि अर्जित करने के पश्चात् दीप्ती ने रेलवे बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की। रेलवे में चयन होने के बाद उन्होंने छत्तीसगढ़ में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके बाद गाजियाबाद में उन्हें विद्युत अभियांत्रिकी का विशेष प्रशिक्षण दिया गया और रेलगाड़ी चलाने की बारीक तकनीकों से परिचित कराया गया। इतने कठोर प्रशिक्षण से गुजरने के बाद ही उन्हें ईंजन ड्राइवर के पद पर नियुक्ति दी गई।

हालांकि इंजन ड्राइवर के रूप में दीप्ती की नियुक्ति सन् 2006 में ही हो गई थी, परन्तु स्वतंत्र रूप से रेलगाड़ी चलाने के लिए उन्हें तीन साल प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसका कारण था कि जिन मार्गों पर उन्हें रेल चलानी पड़ती थी, उनके किसी भी स्टेशन पर महिलाओं के लिए रात में रूकने की व्यवस्था नहीं थी। इसलिए उन्हें छोटी-छोटी दूरियों तक दिन में ही रेलगाड़ी चलाकर संतुष्ट हो जाना पड़ता था।

पर अब दीप्ती मोदेकर पूर्णकालिक इंजन ड्राइवर के रूप में कार्यरत है। लम्बी दूरियों तक रेलगाड़ी चलाकर ले जाना उन्हें बच्चों का खेल लगता है। जब वह पहली बार रेल चलाकर अंबाला कैंट स्टेशन पर पहुंची थीं, तब के अनुभव के बारे में वह बताती हैं कि ''स्टेशन पर भारी भीड़ जमा थी। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि वे सभी मेरे स्वागत में खड़े हैं। मुझे लगने लगा था, जैसे मैं कोई वीआईपी या सैलीब्रेटी होंऊं। मेरा मन भीड़ को देखकर गदगद हो गया। कृतज्ञता का भाव भी हृदय में उमड़ रहा था। मुझे विश्वास है कि लोग अब नारी की दक्षता पर भरोसा करने लगे हैं।

चुनौतीपूर्ण कार्य करने की नारियों की क्षमता सभी संदेहों से परे है, परन्तु उनमें आत्मविश्वास की कमी मुख्य बाधा है। दुर्भाग्य से हमारे समाज में अब भी अनेक ऐसे तत्व सक्रिय हैं जो महिलाओं में आत्मविश्वास को पनपने नहीं देते। जब भी कोई नारी लीक से हटकर कार्य करने लगती है तो ये तत्व एक सुर में उसकी आलोचला शुरू कर देते हैं।

लेकिन दीप्ती मोदेकर जैसी नारियों का साहस एक आश्वासन देता है कि आज की नारी चुनौतियों को स्वीकार करने में किसी से पीछे नहीं है। वह पूरी शक्ति से पारंपरिक रूढियों को तोड़ रही हैं। आज केवल एक महिला रेलगाड़ी चला रही है, कल को अनगिनत महिलाएं रेलगाडियां लेकर कठिन सफर पर निकल रही होंगी। उस समय वे केवल नौकरी ही नहीं कर रही होंगी, बल्कि हजारों यात्रियों को उनके गंतव्य तक सुरक्षित ले जाने के कर्तव्य का निर्वाह भी कर रही होंगी। अगली बार जब आप रेलयात्रा पर जाएं तो हो सकता है कि आप जिस रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे हों, उसे कोई महिला ही चला रही हो।

****

सब्जियों और फलों के छिलकों में छिपे हैं जादुई तत्व, जानिए इनके फायदे

हरी सब्जियां हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होती हैं, हरी सब्जियों के सेवन से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि सब्जियों और फलों के साथ साथ उनके छिलके भी हमारे शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। लेकिन आज हम आपको बताने जा रहे हैं इन हरी सब्जियों के छिलके खाने के महत्वपूर्ण फायदों के बारे में।

केले के छिलके सेहत को बहुत सारे लाभ पहुंचाते हैं, केले के छिलके में विटामिन, एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन बी, विटामिन ए पाया जाता है। जो आंखों को मोतियाबिंद के खतरे से बचाता है और साथ ही इसके सेवन से आंखों की रोशनी भी बढ़ती है।

इसके अलावा गाजर के छिलके भी हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होते हैं। गाजर के छिलके में विटामिन बी और मैग्नीशियम और पोटेशियम और न्यूट्रिशंस मौजूद होते हैं। गाजर के छिलके खाने से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी का खतरा भी कम हो जाता है। ये स्वास्थ्य के लिए किसी आयुर्वेदिक औषधि से कम नहीं है।

सेहत के लिए सेब के छिलके बहुत फायदेमंद होते हैं, छिलकों में भरपूर मात्रा में विटामिन और मिनरल्स मौजूद होते हैं। रोजाना सेब के छिलके खाने से कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर का लेवल हमेशा कंट्रोल में रहता है। इस तरह इन फलों के छिलके स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी और किसी आयुर्वेदिक औषधि से कम नही है। इनका सेवन अवश्य करें।

अनुवाद और अनुवादक

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

विज्ञान के बढ़ते कदमों से पूरा विश्व आज एक दूसरे से जुड़ गया है। विश्व में लगभग 203 देश हैं जिनकी भाषाएं व संस्कृतियां एक दूसरे से पूर्णतः अलग है। प्रत्येक देश की न केवल भाषा अलग है अपितु उस देश में अनेक बोलियां और उप बोलियां भी बोली जाती हैं उदाहरण के तौर पर भारत को लिया जा सकता है जहां अनेक भाषा भाषी का संगम है।

माना कि विज्ञान प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर सफलता के शिखर पर पहुंच गया है परन्तु विज्ञान भी ऐसा कोई उपाय नहीं बता सकता कि एक राष्ट्र की भाषा से दूसरे देश की भाषा में कोई कैसे बात करे। विज्ञान की प्रगति से हम हजारों किलोमीटर का सफर कुछ घन्टों में कर सकते हैं लेकिन वहां की संस्कृति व भाषा से अज्ञान ही रह जाते हैं। इस दूरी को कम करने के लिए अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है।

हिन्दी में 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के translation के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता हे । यह लैटिन शब्द trans और lation से बना है । trans का अर्थ 'पार' और lation का अर्थ है 'ले जाने की क्रिया' अतः 'एक पार से दूसरे पार ले जाने की क्रिया translation है।

अनुवाद एक कठिन कार्य है। अनुवाद मात्र भाषा का रूपांतरण ही नहीं है। भाषा के रूपांतरण से संवेदना रहित अनुवाद बन जाता है जिसको अनुवाद नहीं माना जा सकता। अनुवाद ऐसा होना चाहिए जो पाठक को सीधे और शीघ्र समझ में आ जाए। अनुवाद से भिन्न संस्कृतियों/भाषा भाषियों को एक बोली मिल जाती है तथा दो संस्कृतियों में जानकारी का आदान प्रदान सरलता से हो जाता है। अनुवाद एक महत्वपूर्ण विद्या है जो दो भाषाओं को जोड़ने का कार्य करता है। 'अनुवादक' दो भाषाओं को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अनुवादक को मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा का ज्ञान होना चाहिए । एक कुशल अनुवादक अपनी योग्यता और क्षमता से अनुवाद की कठिनाइयों को तथा दोनों भाषाओं के बीच की दूरी को अपने कुशल अनुवाद द्वारा दूर कर लेता है।

अनुवाद के संबंध में बहुत सारी गलतफहमियां हैं। अनुवाद शब्दशः अनुवाद से सबसे अधिक खराब हो सकता है जिसमें अक्सर शब्द का प्रतिशब्द रख दिया जाता है । जिस प्रकार हड्डियों के ढांचे को मानव नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार शब्दों का अनुवाद भी अनुवाद नहीं माना जा सकता । अनुवाद मात्र यांत्रिक कार्य नहीं है। अनुवाद से मूल का पूरा भाव व्यक्त होना चाहिए,

जिससे अनुवाद मात्र अनुवाद प्रतीत न होकर भाषा विशेष की मूलकृति सदृश लगे । अनुवाद अपने आप में सृजनात्मक प्रक्रिया है।

अनुवाद प्रकिया के निम्न सैद्धान्तिक स्वरूप हैं

(क) मूल लेखक क्या कहना चाहता है

(ख) उसके कहने का अर्थ क्या है

(ग) वह उसे किस प्रकार बताता है

अनुवाद के प्रकार

(क) तकनीकी अनुवाद

उपलब्ध तकनीकी साहित्य में से 75 % का प्रयोग विशिष्ट वर्ग द्वारा किया जाता है। तकनीकी विषयों की शब्दावली, परिभाषा, सूत्र व नियम अन्य विषयों से अलग ही होते हैं।

(ख) सरकारी साहित्य का अनुवाद

सरकारी साहित्य तथ्य पर आधारित है जिसका संबंध जनता से होता है और इसे जनता की भाषा में ही प्रस्तुत करना चाहिए।

(ग) विधि साहित्य का अनुवाद

विधि साहित्य सरकारी साहित्य का अंग होते हुए भी उससे अलग है जिसकी भाषा कठिन होती है। विधि साहित्य में एक एक शब्द का महत्व होता है।

(घ) सर्जनात्मक साहित्य

साहित्य का अनुवाद सरल नहीं है, इसके अनुवाद के समय मूल लेखक के भाव को अपनी भाषा में प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक है।

(ङ) इतिहास का अनुवाद

किसी देश के पूर्व वर्षों का लेखा जोखा उस देश का इतिहास कहलाता है जो उस देश की संस्कृति व सभ्यता का दर्पण होता है। इसलिए इतिहास के अनुवाद के समय तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(च) दर्शन शास्त्र संबंधी अनुवाद

दर्शन विद्या को गम्भीर विद्या माना जाता है जिसका अध्ययन सरल नहीं है। यह तर्क पर आधारित होता है।

अनुवाद की समस्याएं

अनुवाद की समस्याएं अनेक हैं, इन समस्याओं के कारण अनुवाद बहु चर्चित एवं बहुआयामी होने के साथ साथ विवादों में भी आ गया है। साहित्य के साथ अनुवाद की समस्या अलग प्रकार की होती है, सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्या सरकारी साहित्य या विधि साहित्य के अनुवाद से भिन्न होती है। संक्षेप में अनुवाद की समस्या को तीन प्रकारों अर्थात् भाषागत, विषयगत और विधागत में बांटा जा सकता है।

निष्कर्ष

अनुवाद का महत्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। किसी भाषा के विचारों को अन्य भाषा में जहां तक हो सके सरल व समान अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्त करना ही अनुवाद है। मूल भाव को व्यक्त करना ही अनुवाद धर्म होना चाहिए।

****

घर में तुलसी का पौधा क्यों जरूरी ?

एक संकलन

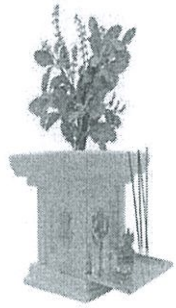

अधिकांश हिंदू घरों में तुलसी का पौधा अवश्य ही होता है। तुलसी घर में लगाने की प्रथा हजारों साल पुरानी है। तुलसी को देवी का रूप माना जाता है। साथ ही मान्यता है कि तुलसी का पौधा घर में होने से घर वालों को बुरी नजर प्रभावित नहीं कर पाती और अन्य बुराइयां भी घर और घरवालों से दूर ही रहती है। यह तो है तुलसी का धार्मिक महत्व, परंतु विज्ञान के दृष्टिकोण से तुलसी एक औषधि है। आयुर्वेद में तुलसी को संजीवनी बूटी के समान माना जाता है। तुलसी में कई ऐसे गुण होते हैं जो बड़ी-बड़ी जटिल बीमारियों को दूर करने और उनकी रोकथाम करने में सहायक है। तुलसी का पौधा घर में रहने से उसकी सुगंध वातावरण को पवित्र बनाती है और हवा में मौजूद बीमारी के बैक्टेरिया आदि को नष्ट कर देती है। तुलसी की सुंगध हमें श्वास संबंधी कई रोगों से बचाती है। साथ ही तुलसी की एक पत्ती रोज सेवन करने से हमें कभी बुखार नहीं आएगा और इस तरह के सभी रोग हमसे सदा दूर रहते हैं। तुलसी की पत्तियां खाने से हमारे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता काफी बढ़ जाती है।

****

जीवन: एक टाइम पास

विमल किशोर
प्रारूकाकर
जल संसाधन विकास प्रभाग

''आज इत्तेफाक़ देखी....वाक़ई एक अच्छी फिल्म थी। एक अच्छा टाइम-पास। रीतिका ने भी एंजॉय किया।'" यह एक वाट्स-एप्प संदेश था। मेरे दोस्त ब्रजेश की तरफ से। मेरे चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। मैंने निर्णय लिया कि मैं भी सप्ताह-अंत पर यही फिल्म देखने जाऊंगा। जैसे ही मैंने यह निर्णय लिया, एक और विचार मेरे मन में आया कि सिर्फ समय बिताने के लिए मैं अपने 3 घंटे देने की योजना बना रहा था। यह उस एक घंटे के अलावा था जो समय मुझे आने और जाने में लगने वाला था। जून की धूप, ट्रैफिक और प्रदूषण झेलते हुए। सिर्फ समय बिताने के लिए। फिर मैंने सोचा कि अपने पूरे जीवन में ऐसे कितने काम थे जो मैंने सिर्फ समय बिताने के लिए किए। अभिगणना करें तो वह लंबी व उकताहट भरी होगी पर सारांश में लगभग सभी काम मैंने सिर्फ अच्छा समय बिताने की उम्मीद से किए।

हमारे विद्या प्राप्त करने और सीखने की सभी ज़िम्मेदारी हमारे माता-पिता के कंधों पर थी। हमें तो यह भी नहीं पता था कि हम वह सब किसलिए सीख रहें हैं। इसके पीछे सिर्फ एक कल्पना थी कि यह सब हमें परिपक्व और जिम्मेदार बनने में मदद करेगा। हमारे माता-पिता ने वह सब सिखाने की कोशिश की, जो हमें एक बेहतर जीवन दे सके। जो भी कुछ उन्होंने अपने जीवन में सीखा, उसे हमें बेहतर तरीके से सिखाने की कोशिश की। हमें सीखने की सुविधाएं दीं।

सीखना, दिमाग से संबन्धित है। परन्तु, सबसे बड़ा प्रेरक घटक, जो हमारे सभी प्रयासों के पीछे है! प्रयास जो हमारे दिमागी विकास हेतु समय-समय पर किए जाते हैं, वो है एक बेहतर जीवन जीने की कल्पना। जीवन बेहतर आनंद के साथ। जीवन एक बेहतर मनोरंजन के साथ। जीवन एक बेहतर टाइम-पास के साथ।

समय बिताना एक बहुत ही साधारण सी अवधारणा प्रतीत होती है। सिर्फ समय बिताने के लिए जीना। कोई भी परिपक्व इंसान इस अवधारणा का मज़ाक उड़ा सकता है। क्या हम वाक़ई यहाँ सिर्फ टाइम-पास के लिए हैं। यह कोई हास्य सा लगता है। इसलिए यह

यहाँ पर स्पष्ट होना चाहिए कि समय बिताने का अर्थ समय व्यर्थ करना बिलकुल भी नहीं।

इसमें संशय नहीं कि जीवन एक लंबा सफर है। इस सफर में हमें बहुत सी अच्छी-बुरी, प्राकृतिक व अजीब स्तिथियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि बचपन में हमें परवाह नहीं थी कि हम किस और जा रहे हैं, लेकिन परिपक्वता पा लेने के बाद हम अपनी मंज़िल निर्धारित करतें हैं। हम अपना भविष्य परिकल्पित करतें हैं। इंसान और जानवर में सबसे बड़ा फर्क इतना ही है कि इंसान कल्पना कर सकता है और जानवर नहीं। जानवर वर्तमान में जीते हैं और इसीलिए उनकी जरूरतें बहुत सीमित हैं। जरूरतें, जो उन्हें वर्तमान या फिर निकट भविष्य के लिए संतुष्ट कर सके। परन्तु मनुष्य भविष्य की कल्पना करता है। वह अपनी व अन्यों की भूतकाल में की हुई क्रियाओं का विश्लेषण करता है, अपने भविष्य की कल्पनाओं को सार्थक करने के लिए। और उसी गणना पर अपने लक्ष्य निर्धारित करता है।

कल्पना महत्वाकांक्षी बनाती है। और अगर आकांक्षा पूरी न हो तो कल्पना परेशान भी करती है। जानवरों की तरह हम भी यहाँ अपना समय बिता रहे हैं, लेकिन हमारी कल्पना शक्ति हमें उनसे अलग बनाती है।

हम अपने कार्य-स्थल के साथ जुडे हैं, क्योंकि हमें जीविकोपार्जन के माध्यम से एक बेहतर टाइम-पास चाहिए। हो सकता है यह उत्तरजीविता हो। उत्तरजीविता वह परिस्थिति है, जो हमारी कल्पना शक्ति की कमजोरी की वजह से जन्म लेती है। एक मनुष्य जो तेज़ कल्पना करता है, जो अधिक बुद्धिमानी से कल्पना करता है, और जो प्रयास बुद्धिमान है भूतकाल को विश्लेषण करने के लिए! वह अपनी रूचि के अनुसार कार्य चुनने में सफल हो सकता है। दूसरे शब्दों में मस्तिष्क की शक्ति की विभिन्नता लोगों का स्थान निर्धारित करती हैं। मस्तिष्क की शक्ति, शारीरिक शक्ति से कहीं ज्यादा बड़ी है।

अपने कार्य के साथ रूचि के विपरीत जुडे रहना, या फिर बिना पर्याप्त आर्थिक संतुष्टि के जुड़े रहना, कल्पना शक्ति और विश्लेषण शक्ति की कमी को दर्शाता है। जो लोग अपनी रूचि के अनुसार ही अपना कार्य-स्थल चुनतें हैं, वह अपना समय ज्यादा बेहतर बिता पाते हैं और ख्याति भी प्राप्त करतें हैं। इसके अलावा जीवन चलाने हेतु कार्य करने वाला व्यक्ति भी अपना समय ज्यादा बेहतर बिताना चाहता है, लेकिन उसके लिए उसे या तो अपनी कल्पना शक्ति को बेहतर करना होगा या फिर जरूरतों को कम।

सामाजिक मान्यताओं का दबाव लेना, भेड़चाल में आकर ऐसा भविष्य चुनना जो रुचिकर न हो और दबाव में आकर ऐसे मार्ग पर बढ़ना जो हमारे व्यक्तित्व के अनुसार एक बेहतर टाइम-पास न हो, यह सब दिन-प्रतिदिन एक ट्रेंड बन गया है। खासकर हिंदुस्तान में। अपनी कल्पनाओं को अलग रख कर दूसरों के सफल अनुभवों को बिना रुचि के अपनाना, सुरक्षित ज़रूर हो सकता है परन्तु सर्वोत्तम हो यह ज़रूरी नहीं। हमारी कल्पना शक्ति ही हमें और जीवों से अलग करती है।

बचपन से जो सीखने की प्रक्रिया रही वो कल्पना शक्ति को विकसित करने हेतु रही। जीवन सिर्फ सुरक्षित रहने से बेहतर नहीं बनता, साथ ही जीवन का आनंद लेना भी ज़रूरी है। अपना मार्ग स्वयं चुनना एक मानसिक संतुष्टि प्रदान करता है। सभी आविष्कार कल्पना शक्ति का परिणाम हैं। कल्पना एक सैद्धांतिक अवधारणा है और उसे व्यावहारिक बना पाना एक बड़ी संतुष्टि। एक प्रवर्ती का अनुसरण करना सुरक्षित हो सकता है लेकिन एक नयी प्रथा बनाना बड़ी बात है और वो उस अनुभव के साथ हो पाता है जब आप अपना समय सर्वोत्तम दिशा में लगाते हो।

वैज्ञानिक, डिज़ाइनर्स, संगीतकार, व्यवसायी आदि सभी अपने समय का उत्तम आनंद ले रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपना समय अपने पसंदीदा कार्य में व्यतीत किया है। सारा खेल कल्पना के माध्यम से मस्तिष्क में विराजमान है। ट्रेंड और मान्यताओं का अनुसरण करके हम अपनी कल्पना शक्ति को एक मीठी नींद सुला रहे हैं। आप जो होना चाहते हो या करना चाहते हो, उसकी व उसके संभावित मार्ग की कल्पना करो और उस कल्पना को व्यावहारिक तौर पर संभव बनाना ही समय को सर्वोत्तम व्यतीत करना है।
"
समय पास करो पर समय व्यर्थ मत करो।"

****

जिन्दगी में आप कितने खुश हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है....
बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि आपके कारण कितने लोग खुश हैं....

कवि और धनवान आदमी

साभार

एक दिन एक कवि किसी धनी आदमी से मिलने गया और उसे कई सुंदर कविताएं इस उम्मीद के साथ सुनाईं कि शायद वह धनवान खुश होकर कुछ ईनाम जरूर देगा। लेकिन वह धनवान भी महा कंजूस था, बोला, ''तुम्हारी कविताएं सुनकर दिल खुश हो गया। तुम कल फिर आना, मैं तुम्हें खुश कर दूंगा।''

'कल शायद अच्छा ईनाम मिलेगा।' ऐसी कल्पना करता हुआ वह कवि घर पहुंचा और सो गया। अगले दिन वह फिर उस धनवान की हवेली में जा पहुंचा। धनवान बोला, ''सुनो कवि महाशय, जैसे तुमने मुझे अपनी कविताएं सुनाकर खुश किया था, उसी तरह मैं भी तुमको बुलाकर खुश हूं। तुमने मुझे कल कुछ भी नहीं दिया, इसलिए मैं भी कुछ नहीं दे रहा, हिसाब बराबर हो गया।''

कवि बेहद निराश हो गया। उसने अपनी आप बीती एक मित्र को कह सुनाई और उस मित्र ने बीरबल को बता दिया। सुनकर बीरबल बोला, ''अब जैसा मैं कहता हूं, वैसा करो। तुम उस धनवान से मित्रता करके उसे खाने पर अपने घर बुलाओ। हां, अपने कवि मित्र को भी बुलाना मत भूलना। मैं तो खैर वहां मौजूद रहूंगा ही।''

कुछ दिनों बाद बीरबल की योजनानुसार कवि के मित्र के घर दोपहर को भोज का कार्यक्रम तय हो गया। नियत समय पर वह धनवान भी आ पहुंचा। उस समय बीरबल, कवि और कुछ अन्य मित्र बातचीत में मशगूल थे। समय गुजरता जा रहा था लेकिन खाने-पीने का कहीं कोई नामोनिशान न था। वे लोग पहले की तरह बातचीत में व्यस्त थे। धनवान की बेचैनी बढ़ती जा रही थी, जब उससे रहा न गया तो बोल ही पड़ा, ''भोजन का समय तो कब का हो चुका ? क्या हम यहां खाने पर नहीं आए हैं ?''

''खाना, कैसा खाना ?'' बीरबल ने पूछा।

धनवान को अब गुस्सा आ गया, ''क्या मतलब है तुम्हारा ? क्या तुमने मुझे यहां खाने पर नहीं बुलाया है ?''

''खाने का कोई निमंत्रण नहीं था। यह तो आपको खुश करने के लिए खाने पर आने को कहा गया था।'' जवाब बीरबल ने दिया। धनवान का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया, क्रोधित स्वर में बोला, ''यह सब क्या है? इस तरह किसी इज्जतदार आदमी को बेइज्जत करना ठीक है क्या ? तुमने मुझसे धोखा किया है।''

अब बीरबल हंसता हुआ बोला, ''यदि मैं कहूं कि इसमें कुछ भी गलत नहीं तो...। तुमने इस कवि से यही कहकर धोखा किया था ना कि कल आना, सो मैंने भी कुछ ऐसा ही किया। तुम जैसे लोगों के साथ ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए।''

धनवान को अब अपनी गलती का आभास हुआ और उसने कवि को अच्छा ईनाम देकर वहां से विदा ली।

वहां मौजूद सभी बीरबल को प्रशंसाभरी नजरों से देखने लगे।

****

संतुष्टि एक ऐसा गुण है जो कुछ न होते हुए भी व्यक्ति को प्रसन्न एवं मुस्कुराता हुआ रखता है और असंतुष्टि ऐसा दोष है जो सब कुछ होते हुए भी व्यक्ति को दुखी रखता है।

गायत्री मंत्र रहस्य और बुद्ध
(सतयुग परिवर्तन – कैसे)

प्रवीन कुमार
व.म.प्र.

गायत्री मंत्र ऋग्वेद से लिया गया है गायत्री मंत्र एक रहस्यमय मंत्र है यह मंत्र जनेऊ धारण करते समय व्यक्त किया जाता है। इस मंत्र में सम्पूर्ण ईश्वरीय ज्ञान समाया हुआ है। परन्तु इसका सत्य अर्थ सांसारिक इच्छाओं में मग्न मनुष्यों की समझ के बाहर है। इसका भावार्थ केवल योग दर्शन के अनुभवी व्यक्ति ही समझ सकते हैं (लेखक 30 वर्षों से भी अधिक विपश्यना ध्यान योग में दीक्षित है)। आइये, इस महान वेद मंत्र का अदभुत भावार्थ समझें:-

ॐ भुर्भव: स्व: - अर्थात स्व: ही ईश्वर है।

भावार्थ – ॐ का अर्थ है ईश्वर तथा स्व: है प्राणियों का स्वयं अर्थात अहम अर्थात अंत:करण।
स्व: का उच्चारण अनेक वेद मंत्रों में आता है परन्तु यह सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान की कुंजी है। अज्ञानी, संसारी मनुष्यों ने स्व: शब्द को विकृत कर स्वाहा, भस्म करना, जला देना ही मानकर अर्थ का अनर्थ कर योग ज्ञान को ही भस्मीभूत कर दिया है अत: अब इसे ठीक प्रकार से समझें।

तत्सवितुर्वरेण्यम – अर्थात वह अत्यंत उज्जवल तेजस्व है जो कि सभी प्रकार से वरण करने योग्य है।
भावार्थ – प्राणियों के अंत:करण में ईश्वरीय दिव्य आभा है, प्रदीप्त ज्योति है, यानि सभी प्राणियों में ईश्वर का ही जीवनरूपी तेजस्व है तथा वह ही वरण करने योग्य है। अर्थात हे मनुष्य अपने अंत:करण में ही स्थित ईश्वर का वरण करें।

यह वाक्य सन्यास की ओर भी इंगित करता है। विवाह के समय पति, पत्नी का तथा पत्नी पति का वरण करते हैं परन्तु यहां वेद कहते हैं कि हे मनुष्य अपने ही अंत:करण में स्थित ईश्वर का वरण करें क्योंकि वह अत्यंत कल्याणकारी है इसे ही 'तमसो मा ज्योर्तिगमय' कहा गया है तथा इसे भूलना ही दुख को आमंत्रण देना है यही बुद्ध की शिक्षा भी है। (यहां जनेऊ धारण प्रक्रिया को इस प्रकार से समझ सकते हैं कि व्यक्ति ने

जनेऊ के धागों से स्वयं का वरण कर स्वयं को ही स्वयं में स्थित ईश्वर से बांध लिया है।)

भर्गो देवस्य धीमही – अर्थात यह ही सभी देवताओं में भी प्रमुख (अग्र) है।
भावार्थ – व्यक्ति अनेक देवी देवताओं की पूजा अर्चना करते हैं परन्तु वेदों का भावार्थ है कि अपने अंत:करण में स्थित ईश्वर ही सर्वथा प्रमुख है तथा वह सभी देवी-देवताओं से भी अधिक विशिष्ट है अर्थात हे मनुष्य, देवी-देवताओं की पूजा अर्चना के साथ-साथ अपने अंत:करण में स्थित ईश्वर को भी ध्यान दें जोकि सर्वप्रमुख है।

धियो योन:प्रचोदयात् – अर्थात हे ईश्वर (मेरे) अंत:करण में प्रकाशित हों।
भावार्थ – संसार को चलाने वाला, पालन करने वाला, सबका प्राणपिता, परमपूज्य, सर्वोपरि, परम तेजोमय, सभी देवों में प्रमुख, वह मेरा (तथा सबका) स्व: ही है, वही प्राणों को, जीवन को चला रहा है तथा वह सर्वशक्तिमान मेरे अंत:करण में प्रकट हो ऐसी मेरी प्रार्थना है।

गायत्री और बुद्ध – गायत्री मंत्र ने घोषणा की कि स्व: ही ईश्वर है। ईश्वर की खोज में मनुष्य पहाड़ों, जंगलों आदि में भटकते हैं परन्तु गायत्री मंत्र के कथन से यह इंगित है कि हे मनुष्य, ब्राह्य संसार में ईश्वर की खोज करने की अपेक्षा स्वयं अपने ही अंत:करण में ईश्वर को खोजें। भगवान बुद्ध का सम्पूर्ण मार्ग तथा ध्यान प्रक्रियाएं भी इसी स्व: के अन्वेषण के लिए ही है। भगवान बुद्ध ने कहा : '**अत्ता दीपो भव**'। अर्थात (इस संसार रूपी भवसागर के लिए) स्वयं के द्वीप स्वयं ही बनें। सत्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वयं में ही ध्यान योग की शिक्षा दी। स्व: को विभक्त कर, मुख्य रूप से चार प्रकार के उत्तरोत्तर ध्यान उन्होंने व्यक्त किये:-

1. **काया अनुपश्यना** : यानी अपनी ही काया (शरीर) के सभी क्रियाकलापों के प्रति सजग रहना, श्वास पर ध्यान लगाना। काया की आयु बढ़ने, दुख, व्याधि आदि को जानना कि काया अनित्य है, नश्वर है। कायिक इंद्रिय द्वारों की संसार के विषयों से रक्षा करना। कुसंगति तथा कुमार्ग से काया की रक्षा करना।

2. **वेदना अनुपश्यना** : अर्थात काया में होने वाली संवेदनाओं के प्रति सजग रहना तथा समता पूर्वक उनके उदय व्यय को जानना। कुसंस्कारों की ओर ले जाने वाले संवेगों से स्वयं को बचाना। संवेदनाओं के कारण उत्पन्न इच्छाओं तथा तृष्णाओं के प्रवाह में न बहना।

3. **चित्तानुपश्यना** : अर्थात मन में होने वाले विचारों के धारा प्रवाह के प्रति सजग रहना। मन में उत्पन्न होने वाली बुरी इच्छाओं से बचना, उनका दमन करना तथा उत्तम विचारों का पोषण करना। अंत में चित्त को विचारशून्य परम शांति की ओर ले जाना क्योंकि विचारशून्यता से ही ध्यानयोग प्रबल तथा सफल होता है।

4. **धर्म अनुपश्यना** : धर्म यानि क्रियाफल (cause & effect)। पूर्वोक्त काया, संवेदना तथा चित्त से किए जाने वाले कर्म तथा इन कर्मों के फल के प्रति सजग रहना। अनुभवों से यह जानना कि काया, वाणी, मन से किए गए कर्मों का किस प्रकार से फल प्रकट होता है। एक उदाहरण: काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि कर्मों को करने वाला व्यक्ति इनका फल प्रकट होने पर कालांतर में, स्वयं में ही उत्पन्न व्यग्रता (बैचेनी) अथवा दुख अनुभव करने लगता है। तथा इस प्रकार के कर्मों को न करने का उसका निश्चय बढ़ता जाता है तथा वह सत्धर्मों को जैसे दान, सदव्यवहार, सदाचार, तप आदि की वृद्धि करने लगता है।

भगवान बुद्ध के अनुसार यह ही मुक्ति का मार्ग है और इस प्रकार से तपस्या करते-करते वह व्यक्ति ध्यान की ऊंची अवस्थाओं का अनुभव करने लगता है, ॠद्धि-सिद्धि को प्राप्त कर अंत में स्वयं में स्थित परमचैतन्य स्वरूप ईश्वर से एकाकार हो जीवन मृत्यु से परे अमर अवस्था की प्राप्ति करता है तथा पुनः पुनः जन्म मरण के फेरे को तोड़कर, भगवान बुद्ध के समान मोक्ष को प्राप्त कर देवताओं तथा ब्रह्माओं का भी पूजनीय हो जाता है।

इस प्रकार से हमने देखा कि गायत्री मंत्र को भगवान बुद्ध ने किस प्रकार से व्यवहारिक ध्यान मार्ग से परिपूर्ण किया। यदि मनुष्य स्वयं में ही स्थित ईश्वर को खोजे तो नित्यता (अकाल/परमेश्वर) की प्राप्ति कर कलयुग को सतयुग में परिवर्तन कर सकता है तथा यहीं गायत्री का महान रहस्य है।

जो व्यक्ति दिन में एक बार, दो बार अथवा अनेक बार ध्यान तपस्या करते हैं, उन्हें देवता समझना चाहिए।

- स्वामी विवेकानंद

कम्प्यूटर पर यूनिकोड हिन्दी का इंस्टॉलेशन

शारदा रानी
वरि. सहायक
हिन्दी अनुभाग

गत कुछ वर्षों से कम्प्यूटर पर अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में काम बहुत हुआ है । दुनिया की ज्यादातर प्रमुख भाषाओं को कम्प्यूटर से जोड़ने में यूनिकोड नामक एनकोडिंग सिस्टम का बहुत बड़ा हाथ है। इनमें हिंदी भी शामिल है। जब हम कम्प्यूटर खरीदते हैं तो उसमें हिंदी में काम शुरू करने से पहले कुछ सेटिंग्स की जरूरत पड़ती है इसे यूनिकोड समर्थित फोंट कहते हैं । यूनिकोड हिंदी में लिखे दस्तावेज स्टोर भी हिंदी में ही किए जाते हैं और उन्हें इंटरनेट पर भेजते समय फोंट साथ में भेजने की जरूरत नहीं होती। वे अलग-अलग ऑपरेटिंग सिस्टम्स जैसे मैक और लिनक्स पर भी पढ़े जा सकते हैं। अगर हम कामचलाऊ तौर-तरीकों की बजाय हिंदी के मानक तरीके से कम्प्यूटर पर काम करना चाहते हैं तो हमें ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनिकोड हिंदी को सक्रिय करना चाहिए । विभिन्न कम्प्यूटरों में यूनिकोड इन्स्टॉलेशन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

विंडोज 2000

इस ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनिकोड हिंदी समर्थन सक्रिय करने के लिए विंडोज 2000 की इन्स्टॉलेशन सीडी की जरूरत प ड़ेगी, क्योंकि इस प्रोसेस के दौरान भारतीय भाषाओं से संबंधित फाइलें सीडी से कम्प्यूटर में कॉपी होती हैं।

1. Start>Settings>Control Panel>Regional Options>Languages पर जाने के बाद दिखाई देने वाली लिस्ट में **Indic** पर टिक करें और **Apply** बटन दबाएं।

2. अब एक डायलॉग बॉक्स आपको बताएगा कि आपके कम्प्यूटर में इन्डिक (भारतीय भाषाओं की सामूहिक पहचान के तौर पर इस्तेमाल होना वाला नाम) और कुछ दूसरी भाषाओं की फाइलें कॉपी होने जा रही हैं। **OK** दबाएं।

3. यहां आपसे विंडोज 2000 की इन्स्टॉलेशन सीडी मांगी जाएगी और सीडी दिए जाने के बाद भाषाई फाइलें कॉपी होनी शुरू हो जाएंगी।

4. जब यह काम पूरा हो जाए तब **Input Locales** टैब में ऊपर दिया **details** बटन दबाएं और फिर **Add** बटन पर क्लिक करें। अब खुलने वाले छोटे डायलॉग बॉक्स में अलग-अलग स्क्रिप्ट्स की लिस्ट होगी, जिसमें हिंदी (देवनागरी) को चुनें। अब **OK** करें जिससे **Regional Options** वाला डायलॉग बॉक्स बंद हो जाएगा।

5. कम्प्यूटर के टास्क बार पर राइट साइड पर **HI** दिखाई देगा। उस पर क्लिक करेंगे तो एक दूसरा ऑप्शन **EN** दिखाई देगा। असल में यह लैंग्वेज बार है जो आपको काम करने के लिए अंग्रेजी या हिंदी में से किसी एक भाषा को चुनने की सुविधा देता है। हिंदी में काम करने से पहले **HI** ऑप्शन को चुनें और माइक्रोसॉफ्ट वर्ड या किसी भी दूसरे यूनिकोड समर्थित सॉफ्टवेयर में टाइपिंग शुरू करें।

नोट: अलग-अलग भाषाओं के बीच आने-जाने के लिए माउस क्लिक करने की बजाय Alt+Shift का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

विंडोज एक्सपी

इस ऑपरेटिंग सिस्टम में भी प्रोसेस करीब-करीब एक-सा ही है। हां, इसके इंटरफेस में फर्क होने से थोड़ा-सा कन्फ्यूजन जरूर हो सकता है।

1. विंडोज एक्सपी में Start>Control Panel>Date, Time, Language and Regional Options>Regional & Language Options>Languages Tab पर जाएं और अब Install files for complex scripts... पर क्लिक करने के बाद Apply दबाएं।

2. अब खुलने वाले डायलॉग बॉक्स में दिखाया जाएगा कि आप अपने कम्प्यूटर में इन्डिक और कुछ दूसरी भाषाओं की फाइलें कॉपी करने जा रहे हैं। इस पर OK करें।

3. इस पर आपसे इन्स्टॉलेशन सीडी मांगी जाएगी। इसके बाद कम्प्यूटर सीडी से कुछ फाइलों को कॉपी करेगा।

4. यह प्रोसेस पूरा होने पर इसी टैब में ऊपर दिया Details बटन दबाएं और Add बटन पर क्लिक करें। अब खुलने वाले छोटे डायलॉग बॉक्स में अलग-अलग स्क्रिप्ट्स की लिस्ट होगी, जिसमें हिंदी को चुनें। अब OK बटन दबाकर Regional & Language Options वाला डायलॉग बॉक्स बंद करें।

विंडोज टास्क बार पर EN और HI वाला ऑप्शन दिखाई देने लगेगा। यानी हिंदी यूनिकोड समर्थन सक्रिय हो चुका है।

नोट : अगर लैंग्वेज बार दिखाई न दे तो Start>Control Panel>Date, Time, Language and Regional Options>Regional & Language Options>Languages Tab> Details पर जाएं और Language Bar... बटन पर क्लिक करें। यहां दिखने वाले Show the Language bar on the desktop ऑप्शन के सामने बॉक्स पर टिक कर OK करें और फिर से OK दबाकर डायलॉग बॉक्स बंद करें। लैंग्वेज बार दिखने लगेगा।

विंडोज सर्वर 2003

इसमें लगभग विंडोज एक्सपी की ही तर्ज पर हिंदी समर्थन सक्रिय होता है।

विंडोज विस्टा और विंडोज 7

इन ऑपरेटिंग सिस्टम्स में भाषाई फाइलें पहले से ही मौजूद हैं इसलिए हिंदी को सक्रिय करते समय सीडी नहीं मांगी जाती। इनमें एक मिनट में हिंदी में काम शुरू किया जा सकता है।

1. Start>Control Panel>Clock, Language and Region> Region and Language पर क्लिक कर Region And Language डायलॉग बॉक्स खोलें।

अब Keyboards and Languages टैब पर क्लिक करें और फिर Change Keyboards... दबाएं।

अब दिखने वाले डायलॉग बॉक्स में Add बटन दबाएं जिससे भाषाओं की लिस्ट दिखाई देने लगेगी। यहां Hindi (India) को चुनें और फिर वहीं दिए + के निशान पर क्लिक कर Devnagari-Inscript की-बोर्ड को चुनें। आप चाहें तो वहां मौजूद दो दूसरे की-बोर्ड Hindi Traditional या US को भी चुन सकते हैं। भारत का मानक की-बोर्ड इनस्क्रिप्ट है। हालांकि कुछ लोग पुराने ढंग से टाइप करने के लिए Hindi Traditional और रोमन के जरिए हिंदी टाइप करने के लिए US की-बोर्ड का इस्तेमाल करते हैं। बस OK बटन दबाएं और लैंग्वेज बार में हिंदी हाजिर है।

****

'जीवन को मधुर बनाने वाले कडवे प्रवचन'

मां-बाप की आंखों में दो बार ही आंसू आते हैं। एक तो लड़की घर छोड़े तब और लड़का मुंह मोड़े तब। पत्नी पसंद से मिल सकती है मगर मां तो पुण्य से ही मिलती है इसलिए पसंद से मिलने वाली के लिए पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकरा देना। जब तू छोटा था तो मां की शय्या गीली रखता थां, अब बड़ा हुआ तो मां की आँख गीली रखता है। तू कैसा बेटा है? तूने जब धरती पर पहला सांस लिया, तब मां-बाप तेरे पास थे। अब तेरा फर्ज है कि माता-पिता जब अंतिम सांस लें, तब तू उनके पास रहे।

परमात्मा की परिभाषा क्या है?
परमात्मा की प्रतिमा कैसी है?

श्रीमती सुदेश खेमानी
उप मुख्य प्रबंधक (प्रशा.)

❖ परिभाषा जिसकी हो सके वह परमात्मा नहीं। क्योंकि परिभाषा का अर्थ होता है – जिसके चारों ओर हमने रेखा खींच दी। परिभाषा सीमित की हो सकती है असीम की नहीं हो सकती। तो जो भी हम कहेंगे छोटा होगा। जो हम कहेंगे झूठ होगा – इसलिए लोआत्सू ने कहा है कि सत्य के संबंध में कुछ कहा कि सत्य असत्य हो जाता है। कहने से ही असत्य हो जाता है क्योंकि शब्द बड़े सीमित हैं – सत्य बड़ा विराट है। जैसे मुट्ठी में कोई परमात्मा को बांधने को कहे। मुट्ठी में भी आकाश हो सकता है अगर मुट्ठी खुली हो। परिभाषा तो बंद मुट्ठी की है। कुछ बंधा हुआ नहीं है – सिर्फ ईश्वर है। इंगित हो सकते हैं परिभाषा नहीं हो सकती ।

❖ प्रतिमाएं और कुछ नहीं हैं । जो भी तुमने देखा है उसी की प्रतिमा है इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है – भिन्न-भिन्न उसकी प्रतिमाएं है – फिर भी किसी प्रतिमा में वह चूक नहीं गया है । सब रूप उसी के हैं और सब रूप उसके इसलिए हो सकते हैं कि वह स्वयं अरूप है – अरूप के ही रूप हो सकते हैं । कितनी लहरें सागर में उठती हैं, सभी सागर की हैं – छोटी लहर, बड़ी लहर झाग वाली लहर, बिना झाग वाली लहर, प्रचण्ड तूफान की तरह आती हुई लहर कि डुबो दे नौकाओं को – सभी लहरें उसकी हैं – सभी रूप उसके हैं – एक ही सागर के लेकिन सागर अरूप है ।

❖ जिसने पूछा वह भी परमात्मा का ही रूप है – वह भी एक प्रतिमा है । जब तुम दर्पण के आगे खड़े होकर दर्पण को देखते हो तो जिसको देखते हो वह भी परमात्मा है । मंदिर में रखी मूर्तियां ही परमात्मा नहीं हैं । राह के किनारे अनगढ़े जो पत्थर पड़े हैं वे भी परमात्मा हैं क्योंकि परमात्मा के सिवा कुछ और है ही नहीं । परमात्मा शब्द का एक ही अर्थ होता है – अस्तित्व । परमात्मा शब्द के कारण धोखे में मत पड़ जाना । इसका मतलब व्यक्ति नहीं होता । इसका मतलब होता है वह जो विराट ऊर्जा है जगत की, यह अस्तित्व ऊर्जा है ।

❖ अगर घड़ा है तो घड़े को बनाने वाला भी कोई होगा – उसी प्रकार यह जो प्रकृति है उसको बनाने वाला भी कोई तो है । अनुमान से परमात्मा का कोई संबंध नहीं है क्योंकि हमें यह लगता है कि इतना बड़ा विराट है तो कोई चलाने वाला होगा । परमात्मा अनुमान नहीं है,

तर्क नहीं है, अनुभव है । परमात्मा और उसकी कृति दो नहीं है। हमारे मन में जो धारणा बना दी गई है वह ऐसी है कि परमात्मा दूर कहीं आकाश में स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है – इसलिए हम परमात्मा को पास नहीं देखते, दूर देखते हैं और परमात्मा पास है, पास के भी पास । हम अपने पति में नहीं देखते, घरवालों में नहीं देखते, हम देखते हैं राम में, कृष्ण में, बड़े दूर । परमात्मा तुम्हारे बच्चों में तुतला रहा है, तुम्हारे बच्चों में चलने की कोशिश कर रहा है । तुम कहीं भी झुको उसी के चरणों पर तुम्हारे हाथ पड़ते हैं । आँख उठाओ तो उसी का दर्शन । जिसने परमात्मा को सीमा दी वह परमात्मा का दुश्मन है । तुम स्वयं मुक्त नहीं हो और परमात्मा तक को बंधन में डाला हुआ है । परमात्मा पास में है और निकट का पहचानने का मार्ग प्रेम है – अनुमान नहीं, अनुराग नहीं ।

❖ हमारे अन्दर कुछ ऐसा है जो हमारा बनाया हुआ नहीं है, उससे ही परमात्मा को खोजो । हमारे भीतर प्रेम है जो हमारा बनाया हुआ नहीं है, उससे ही परमात्मा को खोजो । आदमी सब कुछ बना सकता है प्रेम नहीं बना सकता । मंदिर बना लेता है पर अगर उससे कहा जायेगा कि प्रेम बनाओ तो मुश्किल है । लाख आदमी कहे कि इस आदमी में प्रेम करो – तुम कहोगे – कैसे ? आदमी के हाथ में कहां ? जो आदमी के हाथ में नहीं है उसी पर सवारी करो तो परमात्मा तक पहुंच जाओगे । तुम अपने भीतर उसको खोजो जो तुम्हारे बनाने में नहीं आता।

❖ दुःख इतना डांवाडोल नहीं करता जितना सुख कर जाता है । इसलिए समस्त साधकों ने दुःख को वरण कर लिया है और सुख को छोड़ दिया है क्योंकि उन्होंने देखा है कि दुःख इतना दुःखी नहीं करता । अंततः दुःख सुख में आता है – तप का इतना ही अर्थ है । सुख में तुम कुछ पा सकते हो इसकी आशा ही मत करना । लेकिन दुःख में तुम सब कुछ पा सकते हो ।

****

<u>हँसते – हँसते</u>

हमेशा मुस्कुराते रहो, खूब हंसो और दूसरों को भी हंसाओ, जो भी मिले, उससे हंसकर मिलो, क्योंकि क्या पता कल दाँत हों या न हों।

एक आदमी को कितनी जमीन चाहिए

साभार: विश्वप्रसिद्ध कहानियां

एक गांव में पारवोम नाम का एक किसान रहता था। एक दिन उसकी पत्नी की बड़ी बहन उसके घर आई। वह शहर में रहती थी। उसका पति व्यापार करता था। उसने पारवोम की पत्नी से अपने शहरी जीवन की प्रशंसा की। उसने बताया कि वह शहर में अपने पति व बच्चों के साथ अक्सर घूमने व स्केटिंग करने जाती है।

पारवोम की पत्नी को शहर की तारीफ अच्छी न लगी। उसने अपने गांव के जीवन की प्रशंसा करते हुए कहा, ''हमारा जीवन तुम लोगों के जीवन से कहीं अच्छा है। तुम लोगों के पास बहुत-सा धन है, लेकिन तुम बहुत बुरी स्थिति में भी फंस सकते हो। व्यापार का कोई ठिकाना नहीं, कब घाटा हो जाए। परन्तु हम लोगों के साथ ऐसी बात नहीं है। हम किसान बहुत धनी तो नहीं हैं, लेकिन जरूरत की चीजों की कमी भी नहीं पड़ती।''

बड़ी बहन तुरंत उसकी बात काटकर बोली, ''तुम लोगों के पास गाय, बैल और बछड़ों को छोड़कर रखा ही क्या है। न पहनने के लिए अच्छे कपड़े और न ही अच्छे लोगों का साथ। तुम्हारा पति चाहे जितनी भी मेहनत करे, लेकिन तुम लोग इस मिट्टी के घर में ही रहोगे और एक दिन इसी मिट्टी के घर में मर जाओगे।''

यह सुनकर पारवोम की पत्नी ने कहा, ''ऐसी बात नहीं है। हम लोग तुम लोगों से अधिक सुखी हैं। हमारे खेत हमारे अपने हैं। हमें किसी के आगे झुकना नहीं पड़ता। शहर का माहौल ठीक नहीं है। कभी भी तुम्हारे पति को जुए या शराब की आदत पड़ सकती है और तुम्हारा जीवन बर्बाद हो सकता है।''

पारवोम उन दोनों की बातें सुन रहा था। उसने पास आकर अपनी पत्नी का पक्ष लेकर कहा, ''हम अपने खेतों में बचपन से ही काम में लग जाते हैं। इसीलिए बुरी आदतों के विषय में सोचने का हमें समय ही नहीं मिलता। मुझे सिर्फ एक ही बात का दुख है कि मेरे पास जमीन थोड़ी है। यदि मेरे पास अधिक जमीन हो जाए तो फिर मुझे चिंता न रहे।'' इस बातचीत में काफी समय बीत गया, इसलिए दोनों बहने रसोई में काम करने चली गईं।

पारवोम के घर के पास एक महिला रहती थी। एक दिन उसने ऐलान किया कि वह अपनी जमीन बेचना चाहती है। गांव के अन्य किसानों के साथ-साथ पारवोम ने भी

उसकी थोड़ी सी जमीन खरीदी। इसके अतिरिक्त उसने अपने एक रिश्तेदार से भी थोड़ी सी जमीन खरीद ली।

अब पारवोम मेहनत करके काफी अनाज पैदा करने लगा और उसने काफी पैसा इकठ्ठा कर लिया। एक दिन पारवोम के घर एक किसान आया। उसने पारवोम को बताया कि रूस की प्रसिद्ध वोल्गा नदी के पास एक बस्ती बसाई जा रही है। वहां बसने वाले हर आदमी को दस बीघे जमीन मुफ्त दी जा रही है। उस जमीन में बहुत अच्छी पैदावार होती है। कुछ समय पहले वहां एक गरीब आदमी आया था, जिसने उस जमीन पर गेहूं पैदा करके पांच हजार रूबल कमा लिए हैं।

यह खबर सुनकर पारवोम की आंखे खुशी और आश्चर्य से फैल गईं। उसने सोचा कि उसे वहां जल्दी–से–जल्दी जाकर बसना चाहिए।

वह बड़े उत्साह से वहां पहुंचा। उसके परिवार में कुल पांच लोग थे, इसलिए उसे पचास बीघा जमीन मिली। यह उसके गांव की जमीन की तुलना में दोगुनी थी। वह इस जमीन पर गेहूं पैदा करके बेचने लगा। धीरे-धीरे उसके पास काफी पैसा इकठ्ठा हो गया। लेकिन अभी भी पारवोम पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था। वह और जमीन खरीदना चाहता था। एक दिन उसने एक व्यापारी से ठेके पर कुछ जमीन ले ली। उस जमीन पर भी गेहूं की काफी अच्छी फसल हुई और उसने खूब पैसा कमाया। लेकिन वह ठेके की जमीन से खुश नहीं था। वह चाहता था कि उतनी जमीन उसके पास होनी चाहिए।

वह खरीदने के लिए जमीन ढूंढने लगा। कुछ दिनों बाद उसे कुछ गरीब किसान मिले। वे बहुत कम दाम पर अपनी जमीन बेचना चाहते थे। उसने उनसे सौदा तय करके केवल एक हजार रूबल में पांच सौ बीघा जमीन खरीद ली।

एक दिन एक व्यापारी पारवोम के घर आया। वह अपने घोड़ों के लिए चारे की तलाश में था। उसने बताया कि वह बाशकीर से आ रहा है। वहां उसने पिछले दिनों ही एक हजार रूबल में पांच हजार बीघा जमीन खरीदी है।

पारवोम ने सोचा कि एक हजार रूबल में पांच हजार बीघा जमीन तो बहुत ही सस्ती है। वह वहां जाकर काफी जमीन खरीद सकता है। वह अगले दिन ही अपने नौकरों के साथ बाशकीर के लिए रवाना हो गया।

बाशकीर के लोगों ने जब पारवोमा को देखा तो उसे चारों ओर से घेर लिया। जब पारवोम ने उन्हें बताया कि वह जमीन खरीदने आया है तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा।

गांव के मुखिया स्तारशीना ने उससे कहा, ''हमारे पास बहुत जमीन है, जितनी चाहो, खरीद सकते हो। पर हमारी एक शर्त है। कल सूर्योदय होते ही हम एक स्थान पर खड़े हो जाएंगे और तुम्हें उस स्थान से जमीन का चक्कर लगाना शुरू करना पडेगा। सूर्यास्त तक तुम जितनी जमीन का चक्कर लगा लोगे, वह जमीन एक हजार रूबल में तुम्हारी हो जाएगी और यदि चक्कर पूरा नहीं कर सके तो तुम्हारा पैसा हम जब्त कर लेंगे।''

पारवोम जमीन बेचने के इस अदभुद ढंग पर हैरान रह गया। लेकिन फिर भी उसने उनकी शर्त मान ली।

अगले दिन सुबह उसने मुखिया की टोपी में एक हजार रूबल रख दिए। तब तक वहां और भी लोग जमा हो चुके थे। सूर्योदय होते ही वह जमीन का चक्कर लगाने निकल पड़ा।

वह लम्बे-लम्बे डग भरकर चल रहा था ताकि अधिक से अधिक जमीन का चक्कर लगा सके। कुछ दूर चलने पर उसे गरमी लगने लगी। पसीना बहने लगा। उसने कोट उतार दिया और सीधी दिशा में तेजी से बढ़ने लगा।

चलते-चलते उसे लगा जैसे जूता पहन कर चलने में उसे परेशानी हो रही है। उसने जूता उतार दिया और आगे बढ़ गया। चलते-चलते वह सोच रहा था, 'जितना ही आगे बढ़ूंगा, मुझे उतनी ही अधिक जमीन मिलेगी।' यह सोचकर वह और तेज गति से चलने लगा।

दोपहर हो गई तो उसे भूख लगने लगी। उसने जल्दी-जल्दी खाना खाया और बिना आराम किए और अधिक जमीन पाने के लालच में तेजी से चल दिया। धूप तेज हो गई थी। कुछ दूर और चलने पर वह थक कर चूर हो गया। फिर भी वह रूका नहीं। उसने सोचा कि थोड़ी और मेहनत से और अधिक जमीन मिल जाए तो क्या बुराई है। थोड़ा और आगे उसे एक बहुत सुंदर जमीन का टुकड़ा दिखाई पड़ा। 'वह जमीन छोड़ना मूर्खता होगी', यह सोचकर उसने उस जमीन का भी चक्कर लगाने का फैसला किया और तेजी से चलने लगा। उसके पांवों में छाले पड़ गए थे और खून निकलने लगा था।

उसने सूर्य की ओर देखा तो पता चला कि सूर्यास्त में थोड़ा ही समय बाकी रह गया है। उसने मुड़कर मुखिया की ओर देखा। वह बहुत दूर था। उसे लगा कि वह सूर्यास्त कर वहां नहीं पहुंच पाएगा, क्योंकि वह बुरी तरह से थक गया था।

अब वह हर चीज भूल गया। यहां तक कि जमीन की बात भी। अब वह सिर्फ यह सोच रहा था कि किसी तरह से उसकी जान बच जाए। इसलिए मुखिया के पास पहुंचने के लिए चलता गया।

वह जैसे ही मुखिया के पास पहुंचा, सूर्यास्त हो गया। वह लडखड़ा कर मूर्छित सा जमीन पर गिर पड़ा। पर गिरते-गिरते भी उसने हाथ बढ़ाकर रूबल से भरी टोपी छू ली।

मुखिया ने कहा, ''शाबाश पारवोम, तुमने सचमुच काफी जमीन का चक्कर लगाया है। यह सब जमीन तुम्हारी है।''

पारवोम का नौकर उसे उठाने के लिए दौड़ा। लेकिन पारवोम के मुंह से खून निकल रहा था वह मर चुका था।

यह देखकर मुखिया हंसा और उसने पारवोम के नौकर की ओर फावड़ा फेंककर कहा, ''इसे दफना दो।''

नौकर ने पारवोम के सिर से पैर तक तीन गज जमीन खोदी और उसे दफना दिया।

****

मेरी सोच....

- जो प्रभु के करीब है, वह सबसे अमीर है और जो प्रभु से दूर है वह बेबस मजबूर है ।
- अपने से बड़ों के प्रति आपका व्यवहार आपके संस्कारों की पहचान है ।
- निष्ठा और ईमानदारी से किया गया कार्य सकारात्मक परिणाम देता है।
- अपने क्रोध को 'चुप' का जामा पहनाइए क्योंकि एक चुप सौ सुख ।
- प्रतिदिन कुछ क्षण आत्मचिंतन के लिए रखें ।
- दान और मदद का बखान न करें ।
- विश्वास जिन्दगी में एक बार किया जाता है और शक बार-बार ।

******

रामायण : पढ़ने का ग्रन्थ नहीं, जीने का शास्त्र है

कुमारी चेतना माहौर
सुपुत्री श्रीमती शारदा रानी
वरि. सहायक, हिन्दी अनुभाग

<u>राजा दशरथ</u> : राजा दशरथ तीर्थराज प्रयाग हैं। आर्यत्व के आदर्श और राजधर्म के प्रतीक हैं। पवित्रता के वे पर्याय है। निष्काम और निस्वार्थ पुत्रवत्सलता उनसे ग्रहण करें।

<u>तीनों माताएं</u> : दशरथ रूपी प्रयाग को पवित्र करने वाली गंगा, यमुना और सरस्वती रूपा त्रिवेणी हैं। कौशल्या और सुमित्रा तो विश्वविदित हैं। छोटी माता की महिमा सरस्वती के समान गुप्त है जैसे सरस्वती नहीं तो प्रयाग नहीं और कैकयी नहीं तो रामायण नहीं। कैकयी माता ही रामकथा का मूल है। जो भरत जैसा पुत्र उत्पन्न करे उसी का मातृत्व सार्थक है।

<u>भरत</u> : भरत सुचिता की प्रतिमूर्ति, निर्मलता के साक्षात् अवतार। भरत जैसी निर्मलता पा लेने पर और कुछ पाना शेष नहीं रहता।

<u>लक्ष्मण</u> : लक्ष्मण शौर्य और स्नेह का साकार मिश्रण है । त्याग और तप के ज्वलंत स्वरूप हैं । वे इंद्रियजित है । संसार को जीतना चाहते हैं तो इंद्रियों को जीतें ।

<u>शत्रुघ्न</u> : शत्रुघ्न समर्पित कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श हैं। कर्तव्य ही जीवन को उत्कर्ष पर पहुंचाता है। स्वयं को पीछे रखकर धर्म को आगे बढ़ाना, यश की कामना नहीं, सत्य के शासन की कामना करें। शत्रुघ्न के चरित्र का यही सार है।

<u>उर्मिला, माण्डवी और श्रुतकीर्ति</u> : कुलवधुओं का शीत सौन्दर्य इन तीनों देवियों में मूर्तिमान हो गया है। दिव्य दाम्पत्य कैसा होता है ये तीनों देवियां यही सिखाती हैं।

हनुमान : हनुमान भक्ति, सेवा और धर्म के साकार स्वरूप हैं। धर्म के लिए समर्पित, शौर्य और सामर्थ्य ही पुरूषार्थ की सार्थकता है। अधर्म को मिटाने और धर्म की स्थापना करने का व्रत हनुमान प्रभु से सीखें।

विभीषण : विभीषण के लिए न्याय और सत्य ही सर्वोपरि है। न्याय सबसे ऊपर और सत्य सबसे मूल्यवान है। न्याय और सत्य के लिए परिवार, धन, सम्पदा और सर्वस्व को भी छोड़ देना चाहिए।

सुग्रीव : सुग्रीव मैत्री के आदर्श हैं, मैत्री कैसे निभाई जाती है उनसे सीखें।

जटायु : जटायु का जीवन चंदन है। प्रभु चरणों में जटायु के समान चंदन बनकर समर्पित होना ही जीवन की सार्थकता है।

रावण : रावण ने सिद्ध कर दिया कि अद्वितीय शौर्य, असीम सामर्थ्य, अजेय शक्ति, अटूट वैभव और अद्वितीय ज्ञान भी सदाचार के बिना निरर्थक है। सदाचार ही चरम पुरुषार्थ है। रावण के सर्वनाश से यही मंत्र ग्रहण करना चाहिए।

सीता माता : धैर्य की धुरी, शील की आधारशिला, पावनता की गंगोत्री और सतीत्व की ज्वलन्त ज्वाला है, मूर्तिमयी करूणा है । अटूट और अविचलित आस्था सीता माता के रूप में साकार हुई है । सीता का अनुसरण ही नारीत्व की धन्यता है।

श्री राम : राम तो धर्म हैं। "रामो विग्रध्वान धर्म" अर्थात धर्म को देखना हो तो श्री राम प्रभु को देखें। उन्हें अपने जीवन में उतारें। धर्म को जानने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जाने।

सावधान : रामायण पढ़कर अलमारी में रख देने का ग्रन्थ नहीं है। वह जीवन में उतारने का, जीने का शास्त्र है। रामायण को केवल पढ़े नहीं, उसे जीयें। जो रामायण को जीयेगा, रामायण में जीयेगा तब वह स्वयं श्री राम स्वरूप हो जाएगा।

****

पर्यावरण का रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान।

जिन्दगी के साथ कुछ पल

अमित गुप्ता
मुख्य अभियंता, नदी विकास प्रभाग

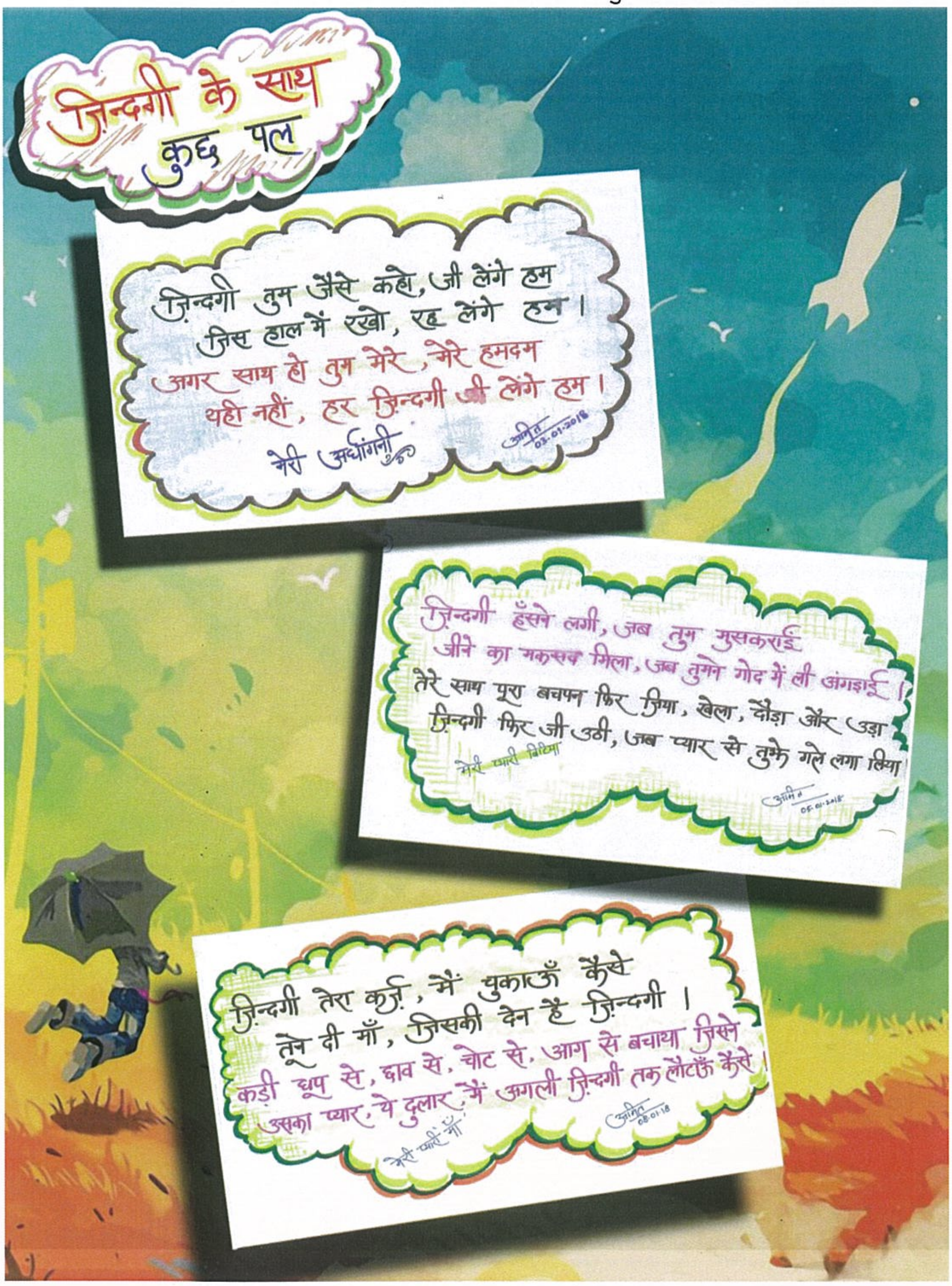

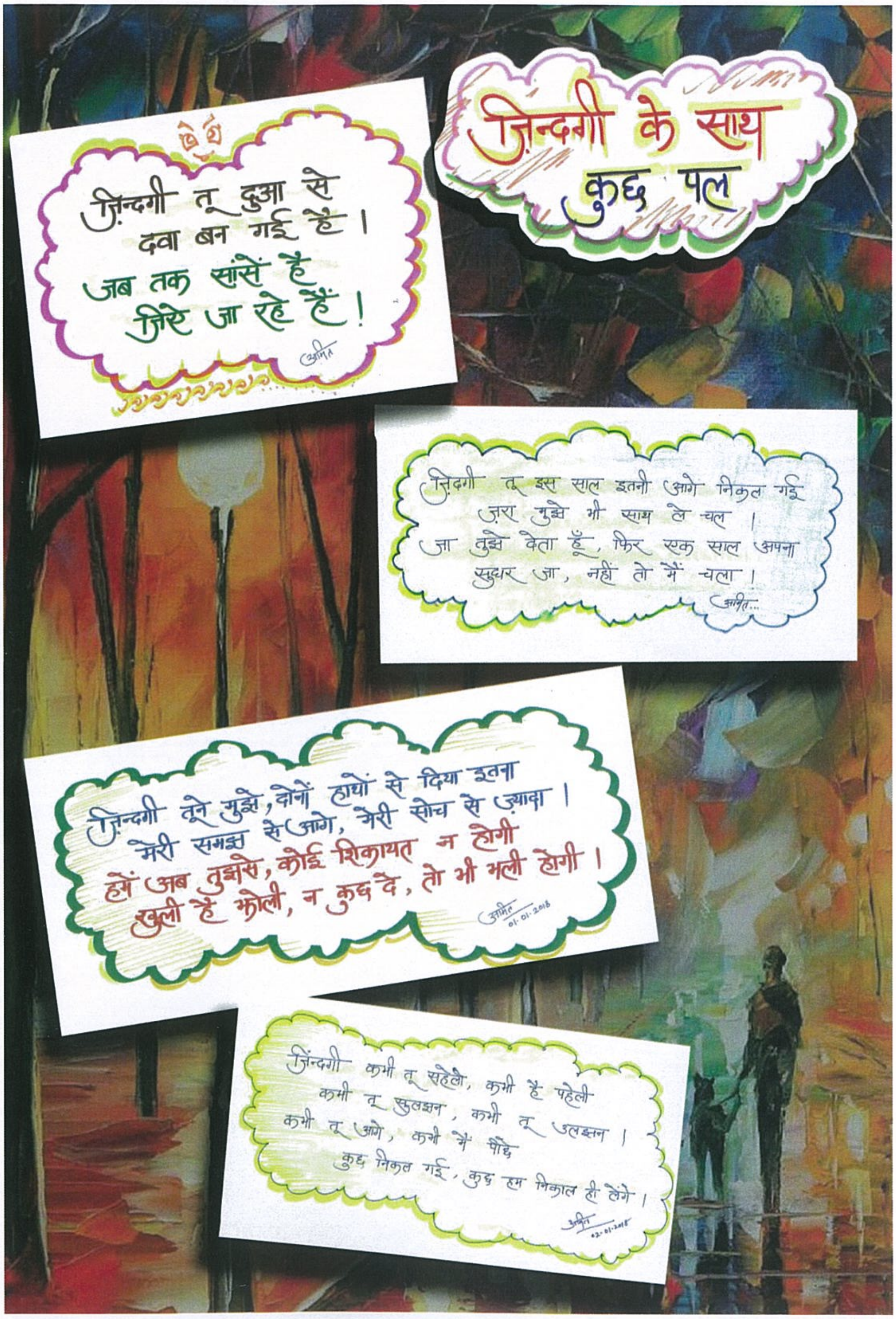
ज़िन्दगी के साथ
कुछ पल
ज़िन्दगी तू दुआ से
दवा बन गई है।
जब तक सांसें हैं
जिए जा रहे हैं!
अमित
ज़िंदगी तू इस साल इतनी आगे निकल गई
ज़रा मुझे भी साथ ले चल।
जा तुझे देता हूँ, फिर एक साल अपना
सुधर जा, नहीं तो मैं चला।
अमित...
ज़िन्दगी तूने मुझे, दोनों हाथों से दिया इतना
मेरी समझ से आगे, मेरी सोच से ज़्यादा।
हाँ अब तुझसे, कोई शिकायत न होगी
खुली है झोली, न कुछ दे, तो भी भली होगी।
अमित 01.01.2018
ज़िन्दगी कभी तू सहेली, कभी है पहेली
कभी तू सुलझन, कभी तू उलझन।
कभी तू आगे, कभी मैं पीछे
कुछ निकल गई, कुछ हम निकाल ही लेंगे।
अमित 02.01.2018

राजभाषा संबंधी कुछ आवश्यक जानकारी

1. भारत संघ की राजभाषा हिन्दी की लिपि कौन सी है। (देवनागरी)
2. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में कितनी बैठकें होनी चाहिएं। (चार बैठकें)
3. राजभाषा अधिनियम 1963 का संशोधन किस वर्ष किया गया? (1967)
4. संविधान में हिंदी को किस रूप में स्वीकार किया गया है। (राजभाषा)
5. संविधान का अनुच्छेद 347 किससे संबंधित है। (राज्यों के बीच पत्राचार की भाषा से)
6. संविधान में हिंदी संबंधी प्रावधानों की व्यवस्था किन अनुच्छेदों में है। (अनुच्छेद 343-351)
7. 'क' क्षेत्र में फाइलों पर टिप्पणियां कितने प्रतिशत लिखनी होती है। (75 प्रतिशत)
8. किस देश में सर्वाधिक भाषाएं बोली जाती हैं। (भारत)
9. माननीय संसदीय राजभाषा समिति की कितनी उप समितियां हैं। (तीन)
10. माननीय संसदीय राजभाषा समिति में कितने सदस्य होते हैं। (तीस - लोकसभा से 20 सदस्य और राज्यसभा से 10 सदस्य)
11. संसदीय राजभाषा समिति अपनी रिपोर्ट किसे भेजती है। (राष्ट्रपति को)
12. हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में दिया जाना चाहिए, यह प्रावधान किस नियम के अन्तर्गत किया गया है। (राजभाषा नियम 1976 के नियम-5 के अन्तर्गत)
13. वार्षिक कार्यक्रम किसके द्वारा बनाया जाता है। (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय)
14. राजभाषा नियम 1976 में कुल कितने नियम है। (12 नियम)
15. हिंदी को राजभाषा बनाने का निर्णय किसके द्वारा लिया गया। (संविधान सभा)
16. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अन्तर्गत राजभाषा अनुपालन संबंधी कौन उत्तरदायी है। (कार्यालय प्रमुख)
17. राजभाषा आयोग की सिफारिशों को लागू करने हेतु कौन सी समिति बनाई गई थी। (संसदीय राजभाषा समिति)
18. शासकीय प्रयोजनों के लिए राजभाषा नियम 1976 किस राज्य पर लागू नहीं होता। (तमिलनाडू पर)
19. पहला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' कब और कहां हुआ। (10 जनवरी, 1975 को नागपुर में)
20. स्टेशनरी तथा अन्य मदों पर द्विभाषी लेख छापना, यह प्रावधान किस नियम के अन्तर्गत किया गया है। (राजभाषा नियम 1976 के नियम-11 के अन्तर्गत)

(डी.के.सेठी)
उप प्रबन्धक (रा.भा.)

******

स्वच्छ भारत अभियान - स्वच्छता पखवाड़ा 2018

स्वच्छ भारत अभियान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा आरम्भ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है इस अभियान का मुख्य उद्देश्य अगले पांच वर्षों में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की 150वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके। लक्ष्य प्राप्ति तक स्वच्छ भारत अभियान निरंतर चलाने की आवश्यकता है। वास्तविक मायने में भारत में रहन सहन की स्थिति का उन्नयन जरूरी है, जो कि स्वच्छता लाकर शुरू किया जा सकता है।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय व इसके सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में दिनांक 16 मार्च 2018 से 31 मार्च 2018 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। तदनुसार, वाप्कोस लिमिटेड के दिल्ली/गुड़गांव, देश व विदेश में स्थित कार्यालयों में भी इस अवधि के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। स्वच्छता पखवाड़े का आरम्भ अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 16 मार्च 2018 को प्रातः वाप्कोस कार्यालय में सभी कार्मिकों द्वारा 'स्वच्छता शपथ' ग्रहण करके किया गया। इसके बाद कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने स्वेच्छा से वाप्कोस में आयोजित श्रम दान कार्यक्रम में भाग लिया व अपने कार्यालय परिसर के अंदर व बाहर उत्साह से साफ-सफाई की।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय, भारत सरकार के मार्ग दर्शन में भारत व विदेशों में विभिन्न स्थानों पर श्रम दान व स्वच्छता संदेश रैलियां आयोजित की गईं। इसी क्रम में दिनांक 22.03.2018 को यमुना तट के पास आईएसबीटी, कश्मीरी गेट पर लद्दाख मार्किट की सफाई हेतु वाप्कोस कार्मिकों ने श्रम दान में भाग लिया। जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से श्री विनोद कुमार, अपर सचिव तथा श्री मनदीप सिंह, एएसओ ने भी भाग लिया।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय व वाप्कोस के कार्मिकों ने संयुक्त रूप से दिनांक 27.03.2018 को यमुना तट स्थित छट घाट की सफाई की।

स्वच्छता का विषय अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जा रहा है। स्वच्छ देश का नाम आते ही विकसित देशों के शहरों की सुन्दरता आंखों में घूमने लगती है। हम अपने देश को अपने घर की तरह ही साफ-सुथरा रख कर अपने देश को स्वच्छता की मिसाल बना सकते हैं । सफाई का कार्य एक मुश्त न होकर निरंतर चलने वाला कार्यक्रम है। इस अवसर पर वाप्कोस के सभी कार्मिकों ने भविष्य में भी साफ-सफाई रखने की प्रतिज्ञा की।

****

पुस्तकालय से

वाप्कोस विश्वेश्वरैया पुस्तकालय में अक्टूबर, 2017 से मार्च, 2018 के दौरान कार्यालय के प्रयोगार्थ हिन्दी की निम्नलिखित पुस्तकें खरीदी गई हैं।

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
1208	राजयोग	स्वामी विवेकानन्द
1209	जो शेष है	मनीष कुमार सिंह
1210	साझीं छत	मनीष कुमार सिंह
1211	विषयांतर	मनीष कुमार सिंह
1212	भारतीय संसद और मीडिया	देवेन्द्र उपाध्याय
1213	भगतसिंह कुछ अधखुले पन्ने	राजशेखर व्यास
1214	अक्षय उर्जा स्त्रोत	विनोद कुमार मिश्र
1215	भारत मे शिक्षा : चुनौतिया और अपेक्षाए	गिरिवर मिश्र
1216	व्रद्धा की दस्तक	सीमा दीक्षीत
1217	सफर सुहाना दुनिया का	आलोक मेहता
1218	जो देखा जो याद रहा	सी वी आनंदाबोस
1219	श्यामा प्रसाद मुखर्जी	शरद सिंह
1220	परछाईयो का समयसार	कुसुम अंसल
1221	बहता हुआ पानी	राजेन्द्र अवस्थी

सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पुस्तकालय में उपलब्ध उक्त पुस्तकों से अपना ज्ञानवर्धन कर सकते हैं।

(पुस्तकालयाध्क्ष)

****

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

Government of India

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय

Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

प्रशस्ति पत्र

Commendation Certificate

यह प्रशस्ति पत्र वाप्कोस लिमिटेड, गुरुग्राम को 'राजभाषा वैजयंती पुरस्कार योजना' के अंतर्गत वर्ष 2015-16 के दौरान उनके द्वारा संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए प्रथम स्थान प्राप्त करने पर प्रदान किया जाता है।

This Commendation Certificate is awarded to WAPCOS Ltd., Gurugram under 'Rajbhasha Vaijayanti Puraskar Yojana' for their excellent work and commendable achievements in implementing the Official Language Policy of the Union during the year 2015-16 for which they have been adjudged First.

अमरजीत सिंह

सचिव, भारत सरकार

Secretary to the Govt.of India

वाप्कोस

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा वाप्कोस लिमिटेड को राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए 'राजभाषा वैजयंती पुरस्कार 2015-16' के 'प्रथम पुरस्कार' स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया

मोहन राकेश

जन्म: 8 जनवरी, 1925; मृत्यु: 3 जनवरी, 1972

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन चुनिंदा साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है और साहित्य जगत् में अधिकांश लोग उन्हें उस दौर का 'महानायक' कहते हैं। उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' के रूप में हिंदी का पहला आधुनिक नाटक भी लिखा। कहानीकार- उपन्यासकार प्रकाश मनु भी ऐसे ही लोगों में शामिल हैं, जो नयी कहानी के दौर में मोहन राकेश को सर्वोपरि मानते हैं। प्रकाश मनु ने कहा "नयी कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी की पूरी तस्वीर बदली है। उस दौर में तीन नायक मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव रहे। खुद कमलेश्वर और राजेंद्र यादव भी राकेश को हमेशा सर्वश्रेष्ठ मानते रहे।

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी, 1925 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उनके पिता पेशे से वकील थे और साथ ही साहित्य और संगीत के प्रेमी भी थे। पिता की साहित्यिक रुचि का प्रभाव मोहन राकेश पर भी पड़ा। मोहन राकेश ने पहले लाहौर के 'ओरियंटल कॉलेज से 'शास्त्री' की परीक्षा पास की। इसके बाद उन्होंने 'पंजाब विश्वविद्यालय' से हिन्दी और अंग्रेजी में एम.ए. किया। एक शिक्षक के रूप में पेशेवर जिंदगी की शुरुआत करने के साथ ही उनका रुझान लघु कहानियों की ओर हुआ। बाद में उन्होंने कई नाटक और उपन्यास लिखे। मोहन राकेश हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटक लेखक और उपन्यासकार थे। समाज की संवेदनशील अनुभूतियों को चुनकर उनका सार्थक सम्बन्ध खोज निकालना उनकी कहानियों की विषय-वस्तु थी।

मोहन राकेश की रचनाएँ पाठकों और लेखकों के दिलों को छूती हैं। एक बार जो उनकी रचना को पढ़ता है तो वह पूरी तरह से राकेश के शब्दों में डूब जाता है। राकेश के उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे', 'न आने वाला कल', 'अंतराल' और 'बाकलमा खुदा' है। इसके अलावा 'आधे अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' उनके कुछ मशहूर नाटक हैं। 'लहरों के राजहंस' उनका सबसे विख्यात नाटक रहा। मोहन राकेश ने नाटक, उपन्यास, कहानी, यात्रा वृत्तान्त, निबन्ध आदि विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की।

वाप्कोस लिमिटेड

WAPCOS LIMITED

(भारत सरकार का उपक्रम)

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय

पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001

दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134

निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)

दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392

ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in